Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कुलिंगिवदनोद्गार-मीमांसा।

(भाग-पहला)

लेखक—

मुनिश्रीसागरानन्दविजय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

णमो समणस्स भगवओ महावीरस्स ।

कुलिङ्गिवदनोद्गार-मीमांसा ।

(भाग-पहला)

लेखक—

मुनि श्री सागरानन्दविजय ।

प्रकाशक—

के. आर. ओसवाल, जावरा (मालवा)

आनंद प्रिन्टिंग प्रेस—भावनगर में मुद्रित ।

श्री वीर सं० २४५२ सन् १९२६ इस्वी.

विक्रम सं० १९८३ रा० सू० सं० २१

मूल्य-सदुपयोग ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूचना–

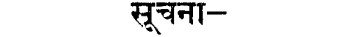

शान्ति, प्रेम और योग्यता का भंग होता है। इसलिये हरएक व्यक्ति को अपने लेखों, वचनों और व्यवहारों में हर समय सभ्यता से काम लेना चाहिये। ऐसा न करने से प्रतिवादियों को वैसी ही असभ्यता का सहारा लेने का मौका मिलता है, जिसका आखिरी नतीजा द्वेष–निन्दा के सिवाय और कुछ नहीं आता।"

नूतन पुस्तकों की सत्यता अथवा असत्यता पर अपने हार्दिक विचार प्रकट करना यह हरएक विद्वान् का खास कर्त्तव्य है, इसलिये "**कुलिङ्गिवदनोद्गार–मीमांसा**" पहिले भाग के विषय में भी विद्वान् वर्ग अपने २ विचार अवश्य प्रगट करेंगे. परन्तु उन को यही सूचित किया जाता है कि प्रस्तुत पुस्तक के विषय में जो कुछ लिखना हो वह सभ्यता के विरुद्ध नहीं होना चाहिये। अगर कोई अन्धश्रद्धा के कारण सभ्यता के तरफ ख्याल न करते हुए असभ्यता से पेश आवेगा तो लाचार होकर के मेरी लेखनी भी उसी प्रकार के मार्ग का अनुकरण किये विना न रहेगी। अतएव शान्ति और सभ्यता से सब कोई अपने २ विचार प्रकट करें, जिससे कि शान्ति का क्षेत्र संकुचित नहीं होवे।

मुनि–सागरानन्दविजय.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ॐ अर्हन्नमः ।

विना टाला-टूली के शीघ्र ही तैयार हो जाओ ।

शास्त्रार्थ के लिये—

पांचवीं वार आव्हान (चेलेंज)

श्रीमान् सागरानन्दसूरिजी !

आपको मालवा देश के रतलाम सी. आई. और सेंवलिया में शास्त्रार्थ कर लेने के लिये तीन मर्त्तबा मुद्रित प्रतिज्ञा और नियम के साथ जाहिर चेलेंज दिये गये । लेकिन वहाँ आपने सभा में शास्त्रार्थ की असमर्थता से हेन्डबिलों के जरिये ही शास्त्रार्थ चालु रखने की मांगणी की । आपकी इस निर्बल मांगणी को भी मंजूर करके हमने अपनी मान्यता के दर्शक मय शास्त्र सबूतों के हेन्डबिल पबलिक आममें जाहिर करना शुरू किये । परन्तु उनका भी जवाब न दे सकने के कारण आखिर आपने महाराजा रतलाम-नरेश के दीवान साहब की खुशामद करके उनके मारफत जजसाहब को भेजा कर हेन्डबिल

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बंद करवाये और वहाँ से आपने अपना पराजय मान के किसी बहाने से पलायन कर दिया।

पलायन कर जाते हुए आपके पास फिर भी गवालियर स्टेट के प्रसिद्ध तीर्थ-स्थल मक्षीजी में शास्त्रार्थ कर लेने के लिये चौथी वार मय प्रतिज्ञापत्र के चेलेंज पहोंचाया गया और सूचित किया गया कि मक्षीजी में आप पंद्रह रोज ठहरो, हम बहुत जल्दी आते हैं। लेकिन शास्त्रार्थ करने के लिये वहाँ भी आपके पैर नहीं टिक सके। अस्तु, अब भी जल्दी विना टालाटूली के तैयार हो जाओ। हम जोधपुर रियासत के प्रसिद्ध तीर्थस्थल श्री भांडवा-महावीर और भीलड़िया-पार्श्वनाथ; इन दो क्षेत्रों में से एक में शास्त्रार्थ के लिये तैयार हैं।

शास्त्रार्थ करने के लिये एक पक्षी क्षेत्र अयोग्य हैं, इसलिये हमारे तरफ से पक्षपात रहित ऊपर मुताबिक दो क्षेत्र मुकर्रर हैं। इनमें दोनों के पक्ष का एक भी घर नहीं है। आपके तरफ से शास्त्रार्थ करने की निश्चित मंजूरी मिलने पर ऊपर के दो तीर्थक्षेत्रों में से ही किसी जैनेतर को जो सभ्य और समझदार होगा मध्यस्थ चुन लिया जायगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हम प्रतिज्ञा करते हैं कि "श्री महावीरस्वामी के वर्त्तमान शासन में साधु साध्वियों के लिये शास्त्र-मर्यादा से सफेद कपड़े रखना अच्छा नहीं हैं" अथवा "अपवाद याने-गाड़ी वाड़ी लाड़ी के प्रेमी यतियों की शिथिलता से महावीर-वेश का परिवर्त्तन कर डालना" ऐसे भावदर्शक मज़मून को आप जो जैन शास्त्रों के सबूतों से साबित कर दोगे और हमारे तरफ के दिये हुए शास्त्रीय सबूत उसका खंडन नहीं कर सकेंगे, तो हम वस्त्र का वर्ण परावर्त्तन करना मंजूर कर लेवेंगे। अन्यथा उसी सभा में तीर्थनायक भगवान् के समक्ष मय साधु समुदाय के आपको निःसंकोच सफेद कपडे धारण कर लेना होंगे। १९-१२-२६

बस ऊपर मुताबिक आपको भी प्रतिज्ञा मंजूर करके जल्दी से शास्त्रार्थ के लिये हाजिर हो जाना चाहिये। हमारे तरफ से स्थान और प्रतिज्ञा ऊपर मूजिब और समय पौषशुक्ला पूर्णिमा, व मध्यस्थ उपरोक्त तीर्थ-क्षेत्रों में का जैनेतर एक सभ्य सद्गृहस्थः बिलकुल नियत ही समझना चाहिये। इतिशम् ता० १९-१२-२६

मुनि-यतीन्द्रविजय।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ताजा कलम—शास्त्रार्थसभा में वादि प्रतिवादि मय-साधु समुदाय और मध्यस्थ एक जैनेतर गृहस्थ के अलावा दूसरा कोई भी नहीं आने पावेगा और न वादि प्रतिवादि के सिवाय कोई बोलने पावेगा। इत्यादि बातों का सरकारी पूरा प्रबंध हमारे तरफ से रहेगा और उसका सभी खर्चा हार जानेवाले के जिम्मे रहेगा। इसी प्रकार शास्त्रार्थ करते समय वादि प्रतिवादि को सभ्यता से बोलने के लिये बाधित होना पड़ेगा। इस शास्त्रार्थ के लिये सागरानन्दसूरिजी के सिवाय किसी को बाहर नहीं आना चाहिये और आवेगा तो माना नहीं जायगा।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शासनपति-श्रीमद्वीरस्वामिने नमः ।

कुलिङ्गिवदनोद्गार-मीमांसा।

(भाग-पहला)

(पिशाचपंडिताचार्य की कुयुक्तियों का वास्तविक उत्तर)

त्रिबुधवृन्दविवन्दितवन्द्यपद् ,
विहितभक्तिविभञ्जितभूविपत् ।
भवपिशाचकुपूरुषबोधकृद् ,
विजयतां प्रभुवीरसुशासनम् ॥ १ ॥

चमत्कार--

" संसार चमत्कार पूर्ण है, इसमें अनेक अजब-गजब चमत्कार भरे हुए है, कमी है तो केवल चमत्कारी-पुरुषों की । लाखों पुरुषों के बीच में चमत्कारी पुरुष कहीं कहीं इनेगिने दृष्टि-गोचर होते हैं और उनके दिखलाये हुए एक एक चमत्कार भी दुनियां में जादुई असर पैदा करते हैं । चमत्कार वही सच्चा माना जा सकता है, जिसके देखने मात्र से सभ्य-संसार में आनंद और श्रीवीरप्रभु के शासन से बहिष्कृत कुलिंगी-अपवादी संसारमें खल-भलाट उत्पन्न हो जाती हो । "

संसार के अनेक चमत्कार-दर्शक ग्रन्थों में से **पीतपटाग्रह-मीमांसा** नामका चमत्कार पूर्ण एक छोटासा ग्रन्थ है । जिसमें

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आलेखित एक एक चमत्कार इतना तीव्र प्रभाववाला है कि जिसके अवलोकन मात्र से सभ्य समुदाय में सत्य वस्तुस्थिति का भान हो आता है और कुलिंगी—अपवादियों के मलिन हृदय में खल—भली मच जाती है। इसको मुद्रित हुए कुछ कम तीन वर्ष हो चुके हैं, परन्तु सत्य वस्तुस्थिति को शास्त्रीय प्रमाणों से दिखलाने वाले इसके रसपूर्ण मंत्र अभीतक नूतन रूप से ही अलंकृत हैं और वे अपनी सत्यता के कारण हमेशां नूतनावस्था में ही कायम रहेंगे।

पाठको ! इस पुस्तक के चमत्कारी—सिद्धान्त शास्त्रार्थ और हेन्डबिलों की कसोटी पर चढ़ कर अपनी वास्तविक सत्यता को सिद्ध कर चुके हैं। इसलिये इसके विषय में अधिक उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है। तथापि इतना तो अवश्य लिखना पड़ता है कि इसी महा महिमशाली पुस्तक के लिये शहर रतलाम में सागरानंदसूरिजीने कोई सात महीने तक खूब दौड़ धूप की, अपने अन्ध—श्रद्धालुओं को घुमाये, हेन्डबिलों के द्वारा अपनी हार्दिक मलिनता को भी जाहिर की, शास्त्रीय—प्रमाण तथा मुठभिया साहब के उच्चाटन—मंत्र (टिकटों) से घबराकर राज्य में जाके आज्ञीजी भी की और आखिर शास्त्रार्थ की गुदड़ी गले में पड़ती देख तीर्थ जाने का बहाना निकाल के रतलाम से निशि-पलायन भी किया। यह सब प्रभाव किसका है ?. पीतपटाग्रह—मीमांसा में आलेखित शास्त्रीय—प्रमाणोपेत चमत्कारों का।

आप लोग जानते ही हैं कि—प्रबल चमत्कारों से उत्पन्न होने वाली कुदकुदाहट एकदम मिट नहीं जाती, उसकी आकस्मिक बलगा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कई दिन तक ज्यों की त्यों कायम रहती है। इसी नियमानुसार अपवाद के हिमायती कुलिंगियों के मलिन हृदय में पलायन कर जाने पर भी उन चमत्कारों की कुड़कुड़ाहट अभी तक मिटी नहीं है, इससे उनने गोड़वाड़ की अन्य-गोदड़ी में बैठ कर अपनी मलिन हृदय की जलन को गालियों से शान्त करना शुरु की है। ठीक ही है—" सेवक या भाट लाख प्रयत्न करने पर भी अपने जजमान से कुछ नहीं पाते, तब वे उसके पुतलों पर अपने आत्म-बल को निष्फल करके ही शान्त हो जाते हैं। "

उद्देश—

" **कारणमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्त्तते**—बिना कारण मूर्ख भी प्रवृत्त नहीं होता, याने मूर्खों की प्रवृत्ति भी किसी कारण के लिये हुए ही होती है तो मर्मज्ञ बुद्धिमानों की प्रवृत्ति बिना कारण कैसे हो सकती है ?, उसमें कोई मुख्य या गौण कारण अवश्य ही होना है। फर्क शिर्फ इतना ही है कि मूर्खों की प्रवृत्ति असभ्यता और स्वार्थपरायणता की पोषक है और बुद्धिमानों की प्रवृत्ति सभ्यता और परोपकारिता की द्योतक है। "

जैन साधु साध्वी अपनी वक्रप्रकृति के कारण अपवादी-कुलिंगियों के समान हमेशा रंगकी झग-मगाहट में लग कर अपने संयम को बरबाद न कर बैठें और शोभादेवी के उपासक न बन जायँ इसीलिये श्रीमहावीर-शासन में साधु साध्वियों के लिये श्वेत, मानोपेत, जीर्णप्राय और अल्पमूल्य वस्त्र रखने की आज्ञा पाई जाती है। शास्त्रकारों की यह आज्ञा अथवा प्रवृत्ति निरर्थक नहीं, सार्थक है। वर्त्तमान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महावीर–शासन में ऐसे कोई कारण (अपवाद) उपस्थित नहीं हैं, जिनके वश से शासन कथितप्रवृत्ति में परिवर्त्तन करना पड़े, और यतियों की शिथिलता को मुख्य कारण मानकर अपने गुप्त अपवादों के सेवनार्थ वर्ण–परावर्त्तन किया गया, या किया जाता है वह महावीर–शासन में शास्त्रोक्त–प्रवृत्ति नहीं, किन्तु कपोल कल्पित ही है। इसकी सिद्धि के लिये अनेक प्रमाण प्रकाशित किये जा चुके हैं अतएव इस विषय को विस्तृत करना निष्फल है।

पाठकवर ! हमारी आधुनिक प्रवृत्ति, कुलिंगी अपवादी लोगों के तरफ से सत्य वस्तुस्थिति को उड़ानेके लिये जो कुतर्क की गई हैं और जो महावीरशासन के असली मुनिवेश को अनुचित ठहराया गया है। उसीका शास्त्रीय प्रमाण युक्तियों से समवलोकन करके सत्य वस्तुस्थिति को प्रकाश में लाने मात्र है। वह भी समवलोकन (निरीक्षण) जिस क्षुद्र–दृष्टि से अपवादि कुलिंगियों ने किया है उस दृष्टि से नहीं, किन्तु सभ्यता को लक्ष्य में रखकर शास्त्र दृष्टि से करना है और वस्तुस्थिति की वास्तविकता को सभ्य–समाज के सम्मुख रखना है।

प्रवेश—

" कोई भी बात या ग्रन्थ (पुस्तक) हो उसमें जब तक प्रवेश नहीं किया जाता, तब तक उसके आन्तरिक स्वरूप की जसलियत का पता नहीं लगता। प्रवेश के बाद ही लेखक का परिचय, लेख का अभिप्राय और उसका मार्मिक–स्वरूप प्रत्यक्ष रूप से दृष्टि के सन्मुख खड़ा हो जाता है। इतना ही नहीं, बल्कि

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उसके लेखक की विद्वत्ता, सत्यता, योग्यता अथवा असभ्यता और मनोमालिन्य का परदा भी खुला हो जाता है।"

महानुभावो ! जिस पुस्तक में आज हमारा प्रवेश है उसका नाम है **यतीन्द्रमुखचपेटिका**। इसके रचयिता (लेखक) का नाम पुस्तक पर नहीं है। इसका सबब लेखक के डरपोकपन के सिवाय और कुछ नहीं है। इसमें बंगाल की मुसाफिरी करते समय जो कंगाली अवस्था का यत्किंचित् अनुभव प्राप्त किया गया, उन्हीं में के कुछ नमूने दर्ज हैं, जिनके अवलोकन करने से लेखक का नाम, उसके हृदय की मलिनता, उसकी पैशाचिक-भाषा और उसकी पाशविकता का पूरा पता लग जाता है। ठीक ही है कि जिसे पुस्तक पर लेखक तरीके अपना नाम रखने रखाने में भी डर लगता है उसके लेखों में बजनदारी कितनी हो सकती है ? कुछ भी नहीं।

दर असल में लेखकने अपनी किताब का यतीन्द्रमुखचपेटिका यह नाम रक्खा है, इस नाम से ही लेखक के मुखपर चपेटा लगानेवाला अर्थ निकल आता है। देखो ! जैन कोषकारोंने और टीकाकार-महर्षियोंने **यति** शब्द का अर्थ **साधु** किया है, उनके इन्द्र याने **सूरि-आचार्य**; यति और इन्द्र का समास कर देने से **यतीन्द्र** बन जाता है, जिसके फलितार्थ से यह आशय प्रगट होता है कि- **आचार्य कहानेवालों के मुख पर चपेटा लगानेवाली यह पुस्तक है**। अब सोचना चाहिये कि **आचार्य कहानेवाले कौन हैं ?, सागरानन्दसूरि**। तो बस इसका मार्मिक-अर्थ समझलो कि पर-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

मार्थतः उक्त पुस्तक उन्हींके मुख पर चपेटा लगानेवाली है। वाह वाह बापा ! ! कैसा सुंदर चमत्कारपूर्ण मार्मिक–अर्थ। यह तो वही कहावत लागु पड़ी कि–' जिसकी लाठी उसीका शिर। '

लेखक की बेसमझी—

" आज कल के लेखकों में यह बड़ा भारी दोष पाया जाता है कि वे कर्त्ता के सिद्धान्तों (मन्तव्यों) को विना समझे ही टाँय टाँय फिस् के घोड़े दौड़ाने लगते हैं और इस निर्बल से निर्बल घुड़–दौड़ से आखिर उनके लिये पलायन का डंका बजने लगता है। फिर वे पीछे से अपने सहायकों समेत गोड़वाड़ की अंध–गुदड़ी का सहारा लेकर चाहे कितना भी उन्मत्त–प्रलाप करें, पर उन कायरों की आह पर कोई भी सभ्य ध्यान नहीं देता। "

इसी नीति का अनुकरण चपेटिका के लेखकने किया है। वह जिस चमत्कार पूर्ण पुस्तक के विषय में अपनी आँते ऊंची चढ़ा कर, उन्मत्त–प्रलाप कर रहा है, उसके कर्त्ता का कथन क्या है ? उसने जनता के सामने किस मन्तव्य को रक्खा है ? उसका प्रतिपादन किस प्रतिपाद्य–विषय के लिये है ? और उसका यह प्रयत्न किस व्यक्ति के लिये हुआ है ? इन बातों का पता चपेटिका के लेखक को अभी तक नहीं लगा। इसीसे उसके सारे प्रलाप सारे अंडबंड लेख और सारे कुटिल उपाय टाँय टाँय फिस् का रूप धारण कर लेते हैं। ठीक ही है–" **निर्बलस्य कुतो बलम्।** "

हमारा मन्तव्य—

१—" वर्तमान काल में भगवान श्रीमहावीरस्वामी का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शासन है जो कि इक्कीस हजार वर्ष पर्यन्त बराबर चलता रहेगा। अतएव वीरशासन को मान्य रखने वाले साधु, साध्वियों के लिये श्वेत, मानोपेत, जीर्णप्राय और अल्पमूल्य वस्त्र ही रखने की जैनागम और प्रामाणिक-ग्रंथों की आज्ञा है।"

२—" यति शिथिल हुए उनसे जुदा भेद दिखलाने के लिये वस्त्रों का वर्ण बदल कर लेना चाहिये, ऐसी आज्ञा किसी जैनागम और प्रामाणिक जैनग्रन्थों में नहीं है। इसलिये गाड़ी वाड़ी लाड़ी के प्रेमी यतियों की शिथिलता को अपवाद मानकर वस्त्रों का वर्ण बदल करना अनुचित और शास्त्र-मर्यादा से रहित है।"

३—" श्वेतवस्त्रों के न मिलने पर कदाचित् कहीं केशरिया या पीला वस्त्र मिले, तो साधु साध्वी उसको वर्ण बदल करके अपने काम में लेवें ऐसी आचार्यों की आचरणा है, लेकिन प्राप्त श्वेत वस्त्र के वर्ण को बदलने की आचरणा नहीं है।"

४—" वर्ण परावर्त्तित-वस्त्र विषयक शास्त्रों में जो जो कारण बतलाये गये हैं उनमें का वर्त्तमान में कोई भी कारण उपस्थित नहीं है। अतएव वर्त्तमान में शास्त्रोक्त कारणों की अनुपस्थिति होने से रंगे हुए वस्त्र रखना और वस्त्रों का रंगना अनुचित ही है।"

५—" शास्त्रों में पांच प्रकार के वस्त्रों का जो स्वरूप बताया गया है उनमें ' **पञ्चविधे वस्त्रे प्ररूपितेऽपि उत्सर्गतः कार्पासिकौर्णिक एव ग्राह्येते।** ' टीकाकारों के इस कथन से कपास के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बने हुए सूति और ऊन के बने हुए ऊनी; ये दो जाति के श्वेत वस्त्र उत्सर्ग से साधुओं को ग्रहण करने योग्य हैं और इनकी अप्राप्ति में शेष तीन जाति के वस्त्रों का ग्रहण आपवादिक है। वर्त्तमान समय में सूत और ऊन के कपडे सर्वत्र मिलना सुलभ है, अतएव साधु साध्वियों को शेष तीन प्रकार के आपवादिक वस्त्र लेने की कुछ भी आवश्यक्ता नहीं जान पडती।"

पाठक महानुभावो ! उपरोक्त मन्तव्यों में से शुरुआत के दो मन्तव्यों के लिये शहर रतलाम में मुनिकर्पूरविजयजी के मार्फत सागरानंदसूरिजीने शास्त्रार्थ करने की मांगणी की, जिसकी उनको मुद्रित प्रतिज्ञा–पत्र के साथ मंजूरी दी गई थी। लेकिन प्रतिज्ञा–पत्र से घबरा कर उनने (सागरानंदसूरिने) शास्त्रार्थ के रूपक को हेन्डबिलों के रूप में परिणत किया। इसी रूपक को लक्ष्य में रख कर दोनों तरफी हेन्डबिल निकलने के दरमियान में ही चर्पटिका के लेखक महाशय अखीर में टाँय टाँय फिस् बोल गये।

हेन्डबिल किसने रोकाये ?

शहर रतलामभां जैनचर्चानुं परिणाम—

लग भग सात महीनाथी रतलाम (मालवा) शहरमां श्री श्री १००८ जैनाचार्य भट्टारक श्रीमद्-विजयराजेन्द्रसूरीश्वरजी महाराजना शिष्य व्याख्यानवाचस्पति श्रीमान् यतीन्द्रविजयजी

१ इस शास्त्रार्थ का पूरा इतिहास जानने की इच्छावाले सज्जन महानुभावों को '**रतलाम में शास्त्रार्थ की पूर्णता**' और '**शास्त्रार्थदिग्दर्शन**' नामकी दोनों किताबें आद्योपान्त वांचना चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

મહારાજ અને શ્રી શ્રી ૧૦૦૮ આચાર્યજી શ્રી સાગરાનંદસૂરિજીની વચ્ચે જૈનસાધુને જૈનશાસ્ત્રોના હુકમ પ્રમાણે ધોલાં કપડાં પહેરવાં જોઇએ કે પીલાં (રંગેલાં) પહેરવાં જોઇયે ? તેની ચર્ચા ચાલતી હતી, તેમાં શ્રીમાન્ યતીન્દ્રવિજયજી મહારાજે પ્રાચીન અર્વાચીન જૈનશાસ્ત્રોના પ્રમાણપાઠ, સાક્ષર જનસમાજ આગલ હેન્ડબિલો દ્વારા આપી જૈનસાધુ સાધ્વિયોને વર્ત્તમાન કાલમાં સનાતન રિવાજ પ્રમાણે શ્વેતજ વસ્ત્રો ધારણ કરવાં, પીલાં લાલ વગેરે રંગીન નહિં, એમ સિદ્ધ કરી બતાવ્યું છે.

શ્રીમાન્ સાગરાનંદસૂરિજીને હેન્ડબિલ દ્વારા સૂચના આપી હતી કે—અપવાદથી સાધુઓને પીલા વસ્ત્રો રાખવા, એવી રીતે આપ કહો છો તો તેની સિદ્ધિમાટે શાસ્ત્રપ્રમાણ જાહેર કરો, પરન્તુ અત્યાર સુધીમાં તેમના તરફથી કોઈ પણ પ્રમાણ જાહેર થયું નથી, તેથી સ્થાનકવાસી, દિગંબર વિગેરે આમ રતલામના લોકોમાં જણાઇ આવ્યું છે કે શ્રીમાન્ સાગરાનંદસૂરિજી પાસે કલ્પિત વેશની સિદ્ધિ માટે કોઇ પણ શાસ્ત્રનો પ્રમાણ છેજ નહિં.

મુનિરાજ શ્રીયતીન્દ્રવિજયજી મહારાજના શાસ્ત્રીય પ્રમાણવાલા હેન્ડબિલોથી ગભરાઈને પોતાની પાસે કંઇપણ પ્રમાણ આપવાનું ન હોવાથી આવા કેટલાક ગાલી—ગલોજના હેન્ડબિલો કાઢ્યા પછી જ્યારે ડોસા (સાગરજી) એ જોયું કે રાજ્યનું શરણ લીધા વગર સામા પક્ષના પ્રમાણોના હેન્ડબિલો બંધ થશે નહિં. ત્યારે શ્રીમાન્ દીવાનસાહેબ સ્ટેટ રતલામના પાસે હેન્ડબિલો બંધ કરાવવા અરજ કરાવી. દયાળુ શ્રીમાન્ દીવાન સાહેબે ડોસા (સાગરજી) ની અરજ ધ્યાનમાં લઇને દીવાળીના દિવસે શ્રી જજસાહેબ સ્ટેટ રતલામને મહારાજ શ્રી યતીન્દ્ર વિજયજી પાસે અને સાગરજી પાસે મોકલાવી બે તરફી હેન્ડબિલો મુદ્દતવી રખાવ્યાં છે.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ભાડુતી વીરશાસન પત્રમાં મરેલ કીર્ત્તિદેવીને ચણુગારવા જેવી જે હકીકત છપાયેલ છે તે બિલકુલ અસત્ય છે. કારણ કે સાગરજીના તરફથી નિકળતાં હેન્ડબિલોમાં તા. ૭-૧૦-૨૩ ના હેન્ડબિલમાં જાહેર થયું છે કે–" शास्त्रों में स्थान स्थान पर सफेद कपडों का ही विधान है " આ હકીકત ઉપરથી વાચકોને સાફ સાફ વિદિત થઈ જાય છે કે સાગરાનંદસૂરિજીનો ચર્ચામાં પરાજય થઇ ચુકયો છે અને શ્રીમાન્ યતીન્દ્રવિજયજી મહારાજનો જય થયો છે. વિશેષ ખુશી થવા જેવી વાત એ છે કે શ્રી સાગરાનંદસૂરિજીએ પોતાના શરીર ઉપર પહેરાતા વસ્ત્રોમાં પણ સફેદ વસ્ત્રને મુખ્ય સ્થાન આપવા શરૂ કરી દીધું છે.

લે૦ વિવેકચંદ્ર.

હિંદુસ્થાન, તા. ૧૨ ડીસેમ્બર સન્ ૧૯૨૩, પૃષ્ઠ-૧૦

પાઠકો! विवेकचन्द्र नामक किसी व्यक्ति के दिये हुए उपरोक्त दैनिक–पत्र के लेखसे स्पष्ट मालूम पड जाता है कि ?–" महाशय सागरानंदसूरिजीने अपनी असमर्थता के कारण आज्ञानी और प्रयत्न करके रतलाम में दीवानसाहब के द्वारा हेन्डबिल खुद बंद करायें. " २–" अपनी मृत–कीर्त्ति को सिंगारने के लिये भाडेतु वीरशासन में झूठे लेख अपनी बहादुरी बताने को छपवाये " और ३–" निज मन्तव्य की सिद्धि के लिये पबलिक आम में कोई भी शास्त्रीय प्रमाण पेश नहीं किया। "

आप जान सकते हैं कि दोनों के हेन्डबिल बंद कराने में भी सागरजी की छिपी हुई कूटनीति है। वह यह है कि–यदि दोनों तरफी हेन्डबिल बंद रखवाने का हुक्म जारी हो जायगा तो लोग जान

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लेवेंगे कि हन्डबिलों को निकालने के लिये राज्य के तरफ से दोनों को मनाई की गई है । अब जरा सोचना चाहिये कि **टाँय टाँय फिस्** होने में क्या बाकी रहा ?, कुछ भी नहीं ! !

दर असल में चर्पटिका के पिशाच--पंडिताचार्यने इसी टाँय टाँय फिस् को छिपाने के लिये अब फिर गुड़गुड़ाना शुरु किया हैं और उसके नमूने रूप में अपनी हार्दिक--मलिनता का सारा गुब्बार चर्पटिका के द्वारा खुला कर दिया है । जिसके वांचने से उनकी पिशाचना का पूरा पता लग जाता है । ठीक ही है कि ' **बहता हुआ मनुष्य जल तरंगों का भी सहारा लेकर विराम पाता है।**

यह शासनरक्षा के भक्ता ?—

ઇન્દ્રિઓના ગુલામો, દ્રવ્ય, પુસ્તકો અને પદવીઓ માટે મરી પડનારા વંદાવા માટે, પુજાવવા માટે, સામૈયા માટે અને શીષ્યો મેળવવા માટે અથાગ પરીશ્રમ કરનારા દાંભિક ગુરૂઓ પોતાના આશ્રિત ભક્તોને સ્વર્ગ કે મોક્ષે પહોંચાડવાનો ઇજારો લઇ બેઠેલાઓ કે તેને જ્યારે કોઇ શ્રીમતી શેઠાણી વાંદે છે અને **' સ્વામી શાતા છેજી, ભાત પાણીનો લાભ દેજોજી '** એ પ્રશ્ન પરંપરા તીણા અવાજે કરે છે ત્યારે આ પંચમકાલના બ્રહ્મચારી ગુરૂબાપલીઆઓની અંતરની શાતાને ગલગલીયાં થાય છે અને દુષ્ટલાભ લેવા દેવાના ઉમળકાઓ છલોછલ ભરાઇ આવે છે. **પામરને રોજ ચોલપટ્ટાઓ ધોવા પડે છે અને ચાકુતીઓ ખાવી પડે છે.** એમનાં સૃષ્ટિવિરૂદ્ધ કૃત્યો જો ઉઘાડાં પડે તો તેમને શું શિક્ષા થાય એ કાયદા શાસ્ત્રીઓ જ જાણી શકે, આમ છતાં બીજાઓને શિક્ષા કરવા કરાવવામાં પોતે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ન્યાયાધીશ બની બેસવામાં અને પોતાને ચોથા આરાના નમુના તરીકે ઓળખાવવાને પણ તૈયાર જ હોય છે.

\+ + + + + + + +

બીજાના અપક્વ વયના અને અપકવ સમજના બાળકોને ચોરી છુપાવી નસાડનારા ગુરૂબાપલીઆઓને ચોટ્ટા કહેવાય નહિં. ચોટ્ટા કહેવામાં આવે તો કાળાનાગની જેમ બીજાઇ ધોળે દહાડે લુંટ કરનારા એ દાંભિક લુંટારાઓ વળી શાહુકારના–વાણીયાના ગુરૂદેવના લેવાસમાં ઉજળા મોઢે નિર્ભય રીતે ફરે છે. દ્રવ્યના ચોરને શિક્ષા ગવર્મેન્ટ કરે છે તો બાળકોને ચોરનારા-ઓની એથીએ વધુ વલે કરવી જોઇયે પણ જ્યાં ગુરૂદેવની ભક્તિ કરવામાં સિદ્ધેસિદ્ધા સ્વર્ગે પહોંચાડવાનું બીડું ઝડપનારા હોય ત્યાં શ્રદ્ધાળુ ભક્તો એ ગુરૂઓના બચાવ માટે શું ન કરે ? શ્રદ્ધાળુ શ્રીમંતો શીષ્ય લોભી ગુરૂઓના સાગરીત ન બન્યા હોય તો આજે એમાંના ઘણા બાળક ચોર ગુરૂઓ જેલજાત્રા કરી રહ્યા હોય અને દળવાના યંત્રપર સંગીત કાઢી રહ્યા હોત. ઘણું જીવો એ સાગરીત શેઠીયાઓ તેમણે જૈનધર્મને વગોવાતો અટકાવ્યો પણ ગુરૂબાપલીઆની આદતને ઉત્તેજન આપ્યું અને એવા ગુન્હાઓને ગુન્હા જ ન ગણાય એવું માનતા કરી મૂક્યા, આવા દાંભિકગુરૂઓના ઉજળા પ્રકરણો બ્હાર પડે તો જૈનોને દુનિયામાં હલકા દેખાવું પડે. છતાં એમાંના દાંભિકોએ જ પરસ્પર લડીને એકબીજાના છીદ્રો તદન ચોખ્ખા રૂપમાં પોતે પડદાબીબી બની બીજાઓને હથીયાર બનાવી જાહેર પેપરોમાં ખુલ્લાં કરી દેશે. છતાં કાલે તેનાપર પડદો નાખવાથી અને વાત વિસારે પડવાથી વળી તેઓ ત્રૈલોકયના ઉદ્ધારક હોવાનો દાવો કરવા ફરતા થઇ ગયા છે.

પંડિત બંસીલાલ સોમનલાલ, કુંભારવાડા, મુમ્બઇ.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

જ્યાં લોભીયા ઘણાં ત્યાં ધુતારા ભૂખે ન મરે એ કહેવત પ્રમાણે દક્ષિણપ્રાંતનો જૈનસમાજ સત્સાધુના વચનામૃતનું પાન કરવા લોભાયેલો છે જ? તેવે સ્થળે ભ્રષ્ટાચારી-ધુતારાઓને ફાવે તેમાં નવાઇ શી? અને **પીતવસ્ત્રધારી ઢોંગીઓના** આગમનથી સારા ક્રિયાપાત્ર મુનિજનો ઉપર અશ્રદ્ધા થાય, તેમના અયોગ્ય વર્તનથી જૈનપ્રજાને નીચું ઘાલવું પડે, પવિત્ર મુનિવેશની યા જૈનશાસનની નિંદા થાય એમાં આશ્ચર્ય શું? આઠ દશ વર્ષથી આવા લોકો અત્રે આવવા લાગ્યા છે, એટલા અરસામાં **આશરે ૭-૮ પીતવસ્ત્રધારી-ભ્રષ્ટાચારી આ દેશમાં ફરી વળ્યા છે.** જેમાનાં **બે જણોના કૃષ્ણકારસ્થાનો જૈન એડવોકેટ પેપરદ્વારા આગળ આવ્યા હતા** છતાં હજુ તેવા ઢોંગીઓ આ દેશમાં ફરી શ્રાવકોના માન અને દ્રવ્યને લૂંટી પોતાની ઇચ્છાઓ તૃપ્ત કરે છે અને પાછા ઉજળા બનવા જાહેરપત્રોમાં વર્ણનો પ્રસિદ્ધ કરી પોતાની મોહજાળ બીજા ઉપર નાંખવા ઇચ્છે છે તો તે કેમ બને? કાકપક્ષી હંસનું ચામડું ઓઢી પોતે હંસ હોવાનું કહે તો જ્યાંસુધી તેની પોલ બહાર નહિં પડે ત્યાંસુધી તેને ક્ષીરનું ભોજન ભલે મળે પણ તેનુ પોકળ ઉઘાડું થયા પછી જો તેને પત્થરનો માર પડે તો સુજ્ઞજનો તેને અયોગ્ય ગણશે નહિં.

જૈન પુ૦ ૧૫ અંક ૩૪ તા. --૯-૧૭.

પાંચમો નંબર **ભાઇ ત્રીકમલાલ ચુનીલાલનો** આવે છે. **તેમના** કુટુંબમાં વીશ વર્ષની તેમની સ્ત્રી **રતન** તથા વૃદ્ધમાતા **જમનાબાઇ** છે. તેમણે ઘણાં કલ્પાંત કર્યાં, વિનંતીઓ કરી, ખોળા પાથર્યા અને પોતાના જીવનહારને હરી ન લેવાને બહુ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

બહુ પ્રયત્નો કર્યા, ત્રણ ત્રણ દિવસ વિદ્યાશાળાને આંગણે આજીજી કરી પરંતુ કઠણ કાળજ્યાં ન પલળવાથી છેવટ શ્રાવણ શુદ ૧૧ (તા. ૧૯–૮–૨૬) સાંજના સાત વાગે ભાઇ **રતન** લાલ થઇ **'મારા ધણીને સોંપો'** એ હૃદયવેધક ભાવના વચ્ચે ઉપાશ્રયમાં મહારાજને શોધવા દોડી. સેંકડો માણસ એકઠું થઇ ગયું અને જોતજોતામાં તોફાન વધી ગયું, કોઇએ આસપાસના સરકારી દીવા ઓલવ્યા, રાડા–પડકારા થવા લાગ્યા, ઉપાશ્રયમાં જતાં કોઈ સાધુ જ ન મળ્યો તેમજ ભક્ત પરિવાર પણ ખસી ગયો હતો. બધું કયાં અદશ્ય થયું તે શોધવું મુશ્કેલ થઈ પડયું, પરંતુ બાઇઓ તો પતિદર્શનના પણ (સોગન) લીધા હતા તે કેમ ખમે ? આસપાસ તપાસ શરૂ થઈ શાંતિનાથ પોળનો પત્તો મળતાં સૌ ત્યાં દોડ્યા; પરંતુ ત્યાંથી કસુંબાવાડાના વાવડ મળતાં ત્યાંથી ત્રીકમલાલનો પત્તો મળી જતાં તેમના ધર્મપત્નિ સાથે રાત્રે ઘરે ગયા ત્યારે સૌ જંપીને બેઠાં.

આ રીતે ઘીના ઠામમાં ઘી પડી ગયું છે, ત્યારે તા. ૨૩–૮–૨૬ સોમવારે શ્રી રામવિજયજી મા૦ તથા બીજા બે થાણા વિદ્યાશાળાએથી નીકળીને અંપડાની પોળમાં શા. ચમનલાલ કાળીદાસને ત્યાં ગયા હતા. અહીં સરકારી અધિકારી હતા અને તેમણે રામવિ. મા. ને કંઈ પુછપરછ કરી (જુબાની લીધી) તેમ સંભળાય છે. આ વળી નવું શું જાગ્યું છે તેના તો સાચા ઘંટ દેવળે વાગશે, બાકી અત્યારે તો આખું અમદાવાદ આવા ચાલુ તોફાનોથી ત્રાહી ત્રાહી પોકારી ગયું છે. છતાં ટ્રસ્ટી મહાશયો ઢાંકપીછોડો કરે ત્યાં સુધી ભાગ્યના ભોગવ્યે જ છુટકો.

જૈન પુ૦ ૨૪, અંક ૩૫ તા. ૨૯ ઓગષ્ટ સને ૧૯૨૬.

મુનિ મહારાજ રામવિજયજી અમદાવાદમાં ત્રણ ચાર વર-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

સથી રહી તેમણે શું શું કૃત્યો કર્યાં છે તે અમો નીચે લખ્યા પ્રમાણે જણાવીએ છીએ—

૧ **પાડાપોળવાળા** શાહ ડાહ્યાભાઇ સકરચંદના છોકરાને નસાડેલા તે બાબત તે છોકરાને અને તેના બાપાપને પુછશો તો મહારાજ સાહેબ છોકરાને કેવી રીતે નસાડે છે અને ક્યાં ક્યાં રાખે છે તેમજ તેમના ભાવી ભક્તો છોકરાઓને નસાડવા કેવી રીતે મદદો કરે છે તેમ તે છોકરાઓના ઘરમાં તેમના બાપાપો કેટલો કલેશ તથા કેટલું નકામું ખરચ કરે છે તે તમામ હેવાલ ધ્યાનમાં આવશે તેવી જ રીતે **ધના સુતારની પોળવાળા** વૈદ્ય શકરાભાઇ પુરૂષોત્તમદાસના છોકરાને શેઠ ચીમનલાલ નગીનદાસની બોર્ડિંગમાંથી કેવી રીતે ભગાડેલો અને કેવી રીતે પાછો આવ્યો તેમજ મહારાજ રામવિજયજીના ભાવી ભક્તોએ કેવી કેવી મદદો કરેલી છે તે તમામ હેવાલ છોકરાની તથા તેના બાપની સહી સાથે **જૈનપેપરમાં** તા. ૨૧ નવેંબર સને ૧૯૨૪ ના અંકમાં **હરણ** તથા તા. ૨૮ મી નવેમ્બર સને ૧૯૨૪ ના અંકમાં પાને ૭૪૯–૭૫૦ **અમારો અમદાવાદનો પત્ર તથા અમારી પત્રપેટી** તથા તા. ૪–૧–૧૯૨૫ ના અંકમાં પાને ૬ **અમારી પત્રપેટીમાં ચંદુનો બીજો કાગલ** તથા તા. ૧૧–૧–૨૫ના અંકમાં પાનું ૨૩ **ભાઇ ચંદુનો ખુલ્લો પત્ર** તથા તા. ૨૫–૧–૨૫ ના અંકમાં પાને ૪૭. ૫૭ **અમદાવાદનો પત્ર ભાઇ ચંદુના બાપનો પત્ર** ઉપર પ્રમાણેના જૈન પેપરના અંકમાં છપાયેલા છે. ....

તેમજ **શામલાની પોળવાલા** સાંકલચંદ મોહકમચંદના છોકરાને તથા હાલમાં **પતાસાની પોલવાલા** મોટી મણીલાલ મગનલાલના છોકરાને **ટેબલાની પોલવાલા** શાહ મફતલાલ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

મગનલાલના છોકરાને કેવી રીતે નસાડેલા તે બાબતની આપ શેઠ સાહેબને તે છોકરાઓના બાપોને તથા તે છોકરાઓને બોલાવી પુછી પુરતી તપાસ કરશો એવી અમારી નમ્ર વીનંતી છે કારણ કે ગરીબ માણસોને ઘરમાં આવા કુટુંબોની તથા તેમના મા બાપની આંતરડીઓ કકલાવે છે તેમ આવા બનાવો બનવાથી અપાસરા આગલ કેવા ધાંધલો થાય છે ? ....

દૈનિક-પ્રભાત તા. ૧૫-૮-૨૬

અમદાવાદ **રતનપોલમાં** નગરશેઠ કુટુમ્બના શેઠ ચમનલાલ ભોગીલાલના બન્ને ભત્રીજા કે જે બંને નાની ઉમ્મરના છે તેમના નામ શેઠ કસ્તુરભાઈ અને કલ્યાણભાઇ છે અને તે બંને સગીરોના વાલી અમદાવાદના મહેરબાન ડીસ્ટ્રીકટ જજ કોરટથી ડેપ્યુટીનાજર મી. ચીમનલાલ બહેચરદાસને નીમવામાં આવેલા છે આ બંને છોકરાઓને દીક્ષા આપવાના ઇરાદે મુનિ શ્રી રામવિજયજી તરફથી તેમજ તેમના રાગી શ્રાવકો તરફથી નાગપુર ખસેડવાની યુકિતઓ રચાયેલી હોય એમ લાગતા વલગતાઓને ખબર પડવાથી તાબડતોબ હાલ તુરત તો તે બન્ને છોકરાઓને કબજે રાખવા કોશીશ કરી ને હવે પછી આ બંને છોકરાને દીક્ષા આપવા કે અપાવવામાં અગર તો નસાડવામાં ન આવે તેવા હુકમ મેલવવા અમદાવાદના મહેરબાન ડીસ્ટ્રીકટ જજસાહેબને અતરેના ડેપ્યુટીનાજરે રીપોર્ટ પણ કરેલાનું સંભલાય છે.

જૈન પુ૦ ૨૪, અંક ૩૫ તા૦ ૨૯ ઓગષ્ટ સને ૧૯૨૬,

ओ ! ! बापा ! बस बस बहुत हुई, बंद करो, व्यर्थ हमारी ढोल जितनी छिपी हुई पोल का परदा खोल कर क्यों शरमिंदा बनाते हो । अरे बापा इसी काली लीला को परदे में रखने के लिये

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सो हम पिशाचपंडिताचार्यों और उनके गुलाम अन्ध-सेवकोंने अपवाद की पछेडी ओढ़ी है। भोलकिया भगवंत-महावीरशासनानुयायियों के शरण में रहने से तो हमको इस प्रकार की मौज-शौख मिल नहीं सकती और न उनमें उक्त लीलाओं का गुब्बार छिपा या दबा रह सकता है। इससे हमारे अपवाद की पछेडी ऐसी प्रभावशाली है कि जिस के सहारे या पक्ष से हमारी सारी मन-मौजें विना भय के ही खट सकती हैं। अस्तु, अपवादसेवकाचार्य चाहे जितनी मौज लूटें इससे हमें कोई मतलब नहीं।

पाठको!-अब हम आप लोगों से पूछते हैं कि-भिन्न भिन्न भवभीरू शासनप्रेमी-विद्वानों के तरफ से प्रकाशित ऊपर दिये हुए न्यूसपेपरों के निकरों में आलेखित लीलायें शासन की रक्षक हैं कि भक्षक? इस प्रकार की अपवादियों के घर की कुटिल करतूतों (लीलाओं) से शासन की रक्षा होती है कि शासन की निन्दा? इन बातों का उत्तर ना के सिवाय आप कुछ भी नहीं दे सकते, तो इस बात को सामान्य बालक भी निःशंसय कह सकता और समझ सकता है कि वस्तुतः भगवान महावीर के निष्कलंक शासन को अपनी हार्दिक मौज मजाहों की पूर्त्ति के लिये ही अपवाद का शरण लेकर पीले, केशरिया या काथिया रंग के वस्त्र धारण करके कलंकित बनाया गया है।

शिथिलाचारी आधुनिक यति नाम धारियों के गाडी वाडी लाडी के प्रेम से भी सेकडों अंश में अपवादी पीतवस्त्रधारी या उसके हिमायती पिशाचपंडिताचार्यों का गाडी वाडी लाडी का प्रेम

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अधिक बढा चढा हुआ नजर आ रहा है। जिसके प्रमाणभूत ऊपर दिये हुए गुनराती पेपरों के फिकरे साक्षी स्वरूप समझना चाहिये। सबब कि विचारे आधुनिक यति तो "हम साधु नहीं, परीग्रह धारी हैं, हमारे में साधुओं के आचार-विचारों की गंध तक नहीं है।" ऐसा खुद अपने मुंह से जाहिर कर रहे हैं, इससे उनमें और कुछ नहीं तो धार्मिक निष्कपटता तो पाई जाती है। परन्तु अपवाद का आश्रय लेनेवाले पिशाचपंडिताचार्यों के हठाग्रही गुरुओं में तो उतना भी गुण नहीं है।

आखिर मान लेना पड़ा—

"यह एक कुदरती नियम है कि संसार में वे मनुष्य जो सत्य के द्वेषी, असत्य के प्रेमी मताग्रही और अपवाद के शरणागत हैं। सत्य के वज्रमय दृढ़ किले को तोड़ने के लिये जब अपरिमित हुल्लड़, अपरिमित भोपा-धूणा और अपरिमित हृदय की मलिनताओं को भी अपनी काली कीर्त्ति का हथियार बना करके वज्रमय सत्य के किले को तनिक भी नहीं खिसका सकते। तब वे विवस होकर अंत में या तो अपने हृदय की मलिनता जाहिर करके, या असली बात को रूपान्तर से मंजूर करके सुख मान बैठते हैं और फिर वे लोगों में अपनी बहादुरी दिखाने के लिये गुनगुनाया करते हैं। जैसे कि अतिस्वच्छ रजनी में जुगनु (खद्योत) का चमत्कार।"

इसी प्रकार चपेटिका के लेखक महाशय और उनके पिशाच-पंडिताचार्यने वीरप्रभु के शासन में जैन मुनिराजों को सफेद कपड़े ही रखना चाहिये, इस शास्त्रीय कथन के सत्य किले को तोड़ने के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

लिये शक्तिभर प्रयत्न भी किया, अन्धभक्तों में उस्केरणी भी की, अपनी मनोमलिनता को भी उगली और राज्य का भी शरण लिया; तथापि उनको सत्य के किले को तोड़ने से मजबूर (लाचार) होना पड़ा और अन्त में उनको चपेटिका के तमाचे सह करके निर्विवाद चपेटिका के द्वारा ही मान लेना पड़ा कि—

" रंगीन कपड़े पहिननेवाले रंगीन कपड़े के आग्रही नहीं है, और न वे लोक महावीर महाराज से ही रंगीन पहिनने का ही नियम था ऐसा मानते हैं. न रंगीन में ही धर्म है ऐसा मानते हैं। " चपेटिका—पृष्ठ ३, पंक्ति ६.

महानुभावो ! समझलो कि चपेटिका के इस उद्गार (लेख) से कैसी स्पष्ट बात जाहिर हो जाती हैं। वह यह कि **" महावीर प्रभु से वस्त्र रंगने का या रंगीन रखने का नियम नहीं था, इसलिये रंगीन कपड़े रखने में धर्म नहीं है "** ऐसा हम (अपवाद को माननेवाले) आग्रह रहित हो करके मानते हैं इसके लिये आप लोग हमारे पीछे क्यों पड़े हैं।

अगर चपेटिका के वाक्य को लक्ष्य में रखकर विचारा जाय तो—' **न वे लोक महावीर महाराज से ही रंगीन पहिनने का ही नियम था ऐसा मानते हैं** ' अर्थात् अपवाद के हिमायती लोग वीरप्रभु के शासन में रंगीन कपड़े पहनने का नियम नहीं मानते। इसलिये ' **न रंगीन में ही धर्म है ऐसा मानते हैं** ' अर्थात्—रंगीन कपड़े पहिनने और रखने में धर्म नहीं है। अतएव ' **रंगीन कपड़े पहिननेवाले रंगीन कपड़े के आग्रही नहीं है** ' अर्थात्—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

रंगीन कपड़ों का आग्रह न रख कर विवर्ण (रंगीन) वस्त्र पहिननेवाले श्वेत वस्त्र में ही धर्म मानते हैं। इस फलितार्थ से भी वही बात जाहिर हुई जो ऊपर दिखलाई जा चुकी है।

हमे आश्चर्य है कि जब चपेटिका के लेखक और उसके पिशाचपंडितार्य को रंगीन कपड़े पहिनने का और रंगीन में धर्म मानने का आग्रह नहीं है तो व्यर्थ ही में क्लेश बढ़ाने के लिये चपेटिका को प्रसिद्ध कराके प्रतिचपेटा खाने का अभिलाष या प्रयत्न क्यों किया गया ? इस अभिलाष या प्रयत्न का नाम आग्रह (हठाग्रह) नहीं तो और क्या हो सकता है ?, कुछ नहीं।

जमाना बदल गया—

" इस बुद्धिवादगम्यमय जमाने में बाबा वाक्यं प्रमाणम् की छिपी धूर्त्तता का किला अब खड़ा नहीं रह सकता। अब तो उन्हीं बातों को स्थान मिल सकता है जो शास्त्रीय प्रमाण—पाठों के सत्य बाणों का तूणीर जिनके हाथ में हो। "

चपेटिका के लेखक को भी विवस होकर जिन सफेद कपड़ों का महावीर शासन में अस्तित्व मान के उसमें धर्म मंजूर करना पड़ा है। उसी की सिद्धि के लिये जैनागम और प्रामाणिक जैनग्रन्थों के प्रमाण—पाठ पबलिक आम में हिन्दी अनुवाद के सहित **जैनर्षिपटनिर्णय** नामक पुस्तक के द्वारा प्रकाशित (जाहिर) हो चुके हैं, जिनके लिये अनेक विद्वान् और पत्र—संपादकों के अभिप्राय—पत्र उपस्थित हैं जो आवश्यकता पड़ने पर प्रकाशित होंगे।

इसी प्रकार पिशाचपंडिताचार्य और उनके अन्धभक्तों को भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चाहिये कि 'गाड़ी वाड़ी लाड़ी के प्रेमी यतियों की शिथिलना अधिक हो जाने से महावीर शासन के अनुयायी जैन साधु साध्वियों को रंगीन कपड़े पहनना चाहिये।' इस बात की सिद्धि या ऐसा ही सिद्ध करने के लिये अगर कोई भी प्रामाणिक शास्त्र का प्रमाण-पाठ हो, उसको पबलिक में जाहिर कर देना चाहिये, जिससे कि पबलिक आम को पिशाचपंडिताचार्यों की सत्यता का पता लग जावे। वरना गाड़ी वाड़ी लाड़ी का प्रेम अपवाद पक्षावलम्बियों के ऊपर सवार हुए बिना नहीं रहेगा। क्यों कि बिन पायेदार मान्यता का शास्त्रीय प्रमाण दिये बिना आधुनिक सभ्य-समाज पर तनिक भी प्रभाव नहीं पड़ सकता। इससे खाली अपवाद अपवाद की माला फेरना निष्फल ही है, ऐसा सामान्य मनुष्य के भी समझ में भले प्रकार आ सकता है।

परस्पर विरोधी लेख—

" उपधानिया मेवा और अपवाद की मौज में निमग्न मनुष्य मदमत्त या मदमत्त होकर जो कुछ लिखते या बोलते हैं, उसमें उनको परस्पर विरोधी लेख लिखने का भान नहीं रहता। ऐसे लोग जो कुछ मन में आया उसीको घसीट डालने में अपनी बहादुरी समझ बैठते हैं। इस बात के दृष्टान्त ढूंढने के लिये अधिक दूर जाने की जरूरत नहीं, इसका ताजा दृष्टान्त चपेटिका के बांचने से ही मिल सकता है जो अपवादियों की विचित्र अक्ल का एक नमूना है।"

चपेटिका के ११ वें पृष्ठ की प्रथम पंक्ति में पिशाचपंडिता-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चार्यने मंजूर किया है कि " संवेगीलोकोने सफेद वस्त्र नहीं रखे ऐसा तो है ही नहीं " बाद में ऐहिक कामनाओं की पूर्त्ति के लालच में पडकर पृष्ठ १० वें की बीसवीं पंक्ति में लिख दिया कि टीकाकारने शुक्ल वस्त्र छोडने का कहा है " इन दोनों लिखावट में परस्पर कितनी विरुद्धता है ? इसको नवतत्त्व का जानकार लडका क्या उससे भी नीचे दर्जे का पढा हुवा बालक जान सकता है । भला ! जो लोग अपने पारस्परिक विरोधि लेखों को भी देखने या समझने की शक्ति नहीं रखते, वे अपवाद का आश्रय लेके केशरिया मेशरिया में लुभावें, इसमें आश्चर्य ही कौन है ?; कोई नहीं ।

" दर असल में ऐसे लोग या पिशाच–पंडिताचार्य अपनी अपनी मलिन भावनाओं के वश होकर निष्कलङ्क शास्त्रों के अर्थों को मरोडने में भी कमी नहीं रखते और न उनको इस प्रकार के महान् अनर्थ के लिये कुछ भय ही पैदा होता है । ऐसे भव-पिशाचग्रसित महानुभावों के अर्थ मरोड का भी एक नमूना देख लेना चाहीये । "

चर्चपेटिका के १० वें पृष्ठ की ७ वीं पंक्ति में श्री गच्छाचार लघुवृत्ति में से उध्धृत करके ८९ वीं ' जत्थयवारडियाणं ' इस गाथा की सार्थ वृत्ति लिखी है कि—

तथा यत्र च ' वारडियाणं ' ति, आद्यन्तजिनतीर्थापेक्षया रक्तवस्त्राणां ' ते कूडियाणं ' ति नीलपीतविचित्र भातिभरतादियुक्तवस्त्राणां च ' परिभोगः ' सदा निष्कारणं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

व्यापारः ' मुक्त्वा ' परित्यज्य शुक्लवस्त्रं यतियोग्याम्बरमित्यर्थः, क्रियत इति शेषः, का मर्यादा ? न काचिदपि तत्र गणे इति ।

—जिस गच्छ में प्रथम चरम शासन की अपेक्षा से लाल वस्त्र और नील पीत विचित्र तरह की भांत से भरे हुए वस्त्र का हरदम निष्कारण व्यापार करने में आवे, और साधु लायक शुद्ध वस्त्र छोड दिया जाय, तो उस में मर्यादा कौनसी रहे ? । देखिये ! टीकाकारने शुक्ल वस्त्र छोडने का कहा है ।

महानुभावो ! आपलोगों की हार्दिक कुटिलता और उत्सूत्रता को अच्छी तरह देख ली । पाठको ! आप लोग भले प्रकार समझ सकते हैं कि संसार में अपने मत–पोषणार्थ कुलिंगी–भवाभिनन्दी लोग शास्त्र–पाठों का अर्थ भी कैसा विचित्र कपोल कल्पित कर डालते हैं ? । भला ! उपरोक्त वृत्ति में ' शुक्ल वस्त्र छोडने को कहा है इस अर्थ के बोधक शब्दों की कहीं गंध तक भी है और शुक्ल शब्द का अर्थ शुद्ध ऐसा कहीं भी उक्त वृत्ति में ग्रहण किया गया है ? अगर कहा जाय कि नहीं, तो फिर पिशाचपंडिताचार्य को इस उत्सूत्रता के बदले में चपेटिका के प्रति चपेटा सिवाय दूसरा क्या दिया जा सकता है ?, नहीं ! नहीं दूसरा कुछ नहीं । ऐसे उत्सूत्रभाषियों को तो यहाँ भी चपेटा और वहां (भवान्तर में) भी चपेटा ही मिलेगा । खैर, अंधपरम्परागाही अपवादाभिलाषुक लोगों के हितार्थ गच्छाचारपयन्ना की उक्त लघुवृत्ति के पाठ का वास्तविक अर्थ यहाँ लिख दिया जाता है—

" जिस गच्छ में प्रथम चरम तीर्थंकर के शासन की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अपेक्षा से साधुयोग्य श्वेत वस्त्र को छोडकर लाल वस्त्रों का और नील पीत विचित्र प्रकार के भाँत से भरे हुए वस्त्रों का हमेशा (निरन्तर) निष्कारण परिभोग किया जाता हो, तो उस गच्छ में कौनसी मर्यादा है ?, कुछ भी नहीं। "

वृत्तिकार महाराज के दिए ' सदा निष्कारणं व्यापारः ' और ' परित्यज्य शुक्लवस्त्रं ' इन दोनों वाक्यों से ऐसा साफ जाहिर हो जाता है कि श्री ऋषभदेव और महावीर भगवान के शासन में जो साधुयोग्य सफेद कपडों को छोड के हमेशा पीत, नीलादि रंगवाले वस्त्र पहिनते हैं वे गच्छ मर्यादा से भ्रष्ट हैं और हमेशा सफेद वस्त्र रखनेवाले साधु गच्छ मर्यादा में हैं। " इससे उक्त वृत्ति-पाठ में " श्वेतवस्त्रधारी साधुओं को गच्छ मर्यादा वाला कहा और पीले नीले आदि रंगीन वस्त्रों के सदा परिभोग करनेवाले साधुओं को गच्छ मर्यादा से भ्रष्ट कहा है। " ऐसा निर्विवाद सिद्ध हुआ, परन्तु ऐसा न्यायसंगत शुद्ध अर्थ को विचारे पिशाचपंडिताचार्य करने लगें तो उनकी आपवादिक सारी पोपलीला का परदा ही फट् बोल जावे।

इसी प्रकार साध्वी विषयक गच्छाचारपयन्ना के वृत्ति-पाठ के अर्थ में पिशाचपंडिताचार्य ने जितना कपोल-कल्पित प्रलाप किया है वह सब उन्मत्त-प्रलापवत् ही समझ लेना चाहिये। महानुभावो ! जैसा पेश्तर का संवेगी शब्द निज गुण के अनुसार अच्छे व्यक्तियों के लिये रूढ हुआ था, वैसा वर्त्तमान में नहीं है। वार्त्तमानिक पिशाचपंडिताचार्यने अपवाद के परदे में बैठे हुए अत्याचारों के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कारण शुद्ध संवेगी शब्द को ऐसा नष्ट--भ्रष्ट बना डाला है कि जिसके सामने बिगडे हुए यति शब्द को भी लज्जित होना पडता है और हाथ में काले बावटे लेना पडते हैं।

कुलिंगी मित्रो ! क्षमा करना, नाराज होने की कोई जरूरत नहीं, हमारी सत्य बोलने की आदत होने से हमारी कलमने भी उसका अनुकरण कर लिया है, इससे वह सत्य को दिखाने में विराम नहीं ले सकती। आप लोगोंने अपवाद के नाम की माला फेर कर बहुत दिन तक रंगबिरंगे राज्य का मजा लूटा। पर अब जमाना बदल गया है, उसने तुम्हारी पोलमपोल की फाकंबाजी को चिरकाल तक सहन की। लेकीन अब उसने संभलकर आप लोगों की एक के पीछे एक, कूटनीति को ढूंढ ढूंढ के सभ्य--समाज की कसोटी पर चढाना शुरू कर दी है। अतएव आप लोगों को कहीं उसके तरफ से अब अनन्त--संसार वृद्धि का खिताब न मिल जावे ? इस बात की सावचेती पूरे तौर से रखना चाहिये।

कुलिंगियों की कुतर्कों पर विचार—

आगे चलकर चपेटिका के लेखकने चपेटिका के पृष्ठ १२, पंक्ती १४ से समाप्ती तक वस्त्रधावन और रंजनवस्त्र विषयक जो हार्दिक बरालें निकाली हैं उनका भी पूर्वपक्ष सहित क्रमशः वास्तविक उत्तर सुनिये—

पूर्वपक्ष—धोना अपवाद से है तो फीर रंगने में उत्सर्ग अपवाद नहीं समझना यह अपनी मन हठ है या और कुछ ?, याने जैसे शास्त्रमें धोने का अपवाद कहा है वैसे रंगने में भी है, पृष्ठ—१२.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उत्तरपक्ष—महानुभाव ! अपवाद से वस्त्र को धो लेने की आज्ञा शास्त्रों में दी हुई है, इससे उसे मनहठ नहीं कह सकते। मनहठ तो वही कहानी है जो शास्त्रों में दिखलाये हुए कारणों के सिवाय शास्त्रों की आज्ञा के विना अपनी कपोल-कल्पना से यतियों की शिथिलता का बहाना लेकर अपवाद के नाम से केशरिया और पीलकिया की मौज उडाई जाय। वर्त्तमान में शास्त्रोक्त कारणों में का कोई कारण न होते हुए भी निष्कारण हमेशा पीले फेन्सी वस्त्र पहिनना और कहना कि टीकाकारने शुक्लवस्त्र छोडने का कहा है, बस ऐसी ही कूटनीति का नाम मनहठ समझना चाहिये।

पू०—हाथ पैर धोने में अपवाद गिने तो रंगने में क्यों नहीं माने ? एवं इसीपाट से वस्त्र का रंगना उत्तर गुण में हर्जा डालता हैं, नहीं कि मूलगुण में या सम्यक्त्व में। पृष्ठ-१४.

उत्तर प०—ज्ञानाशातना टालने के लिये अशुची से भरे हुए हाथ पैरों को धो लेने में शोभा नहीं है। शोभा है तो केशरिया, या पीले रंगीन वस्त्रों के निष्कारण हमेशा रखने में। सूत्रकृताङ्ग के नौवें अध्ययन की टीका के पाठ में उत्तरगुण की अपेक्षा से शोभा के लिये हाथ पैर का धोना वरजा गया वह असंगत नहीं है। परन्तु विना कारण रंगीन वस्त्रों का हमेशा रखना तो शोभा का कारण होने से असंगत ही है। और जो यतियों की शिथिलता को आप लोग कारण बतलाते हैं वह शास्त्रोक्त न होने से मानने लायक नहीं हैं। प्रियवर ! जिस कार्य के लिये शास्त्रों की आज्ञा नहीं है उस कार्य को शोभा के निमित्त आचरण करना इसमें बडा

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

भारी दोष जिनाज्ञा भंग है, जब जिनाज्ञा भंग हुई तो फिर मूल-गुण और सम्यक्त्व रह ही कैसे सकता है ? इसको जरा अपवाद का पर्दा हटाकर सोचो । ठीक ही है कि वत्थिकम्म शब्द के अनुवासनारूप अर्थ को छोडकर नख रोम आदि का समझ जानेवाले पिशाचपंडिताचार्य अशुचि से भरे हुए हाथ पैरों को धोने में भी शोभा समझ लेवें तो कौन आश्चर्य है ?

पू०—' जो धावत्सूसमतीव वात्थम् । ' याने जो साधु वस्त्र को धोता है या काटकर छोटा करता है या छोटे को बडा करता है उसको संयम नहीं होता है ऐसा तीर्थंकर और गणधर महाराज फर्माते हैं, पृष्ठ–१४.

उ०—वस्त्र को प्रमाणोपेत बनाने के लिये फाड कर छोटा बडा किया जाय और नीलफूल आदि अनंतकाय की रक्षा के लिये उसको यतना पूर्वक अचित्तजल से धो लिया जाय तो इसको तीर्थंकर गणधर महाराजने असंयम नहीं कहा । असंयम कहा है इसको जो खास शोभा के लिये ही साधुओं के धोवियों के समान रगड पट्टे लगा कर वस्त्रों को स्वच्छ किये जायँ और भवकेदार पीले केशरिया बनाये जायँ ।

वस्तुतः देखा जाय तो सूत्रकृताङ्ग के ७ वें कुशीलपरिभाषा अध्ययन का पाठ उन्हीं भ्रष्टाचारियों के लिये समझना चाहिये जो शोभादेवी के वास्ते अकारण को कारण बनाकर उत्सूत्र प्ररूपण करते हुए रंगीन झगमगाहट में आनंद मान रहे हैं । याद रक्खो कि धोने के लिये तो भाष्य और टीकाकार महाराजाओं की

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

आज्ञा मौजूद है, पर जिस कारण को तुम आगे रखकर रंगीन वस्त्र पहिनना चाहते हो उसकी आज्ञा नहीं है।

पू०—जिनकल्पिक मुनि जो प्रस्वेद और मलाविल वस्त्रवाले होते हैं वे आपके हिसाब से बडे ही जीवोपघात करनेवाले होंगे ? पृष्ठ–१६.

उ०—जिनकल्पिक मुनि अतिशय और पुन्यराशिवाले होने से उनके प्रस्वेद और मलाविल वस्त्रों में नीलफूल आदि की उत्पत्ति नहीं होती। इसलिये उनको वस्त्र धोने की आवश्यकता नहीं पडती। परन्तु गच्छवासी स्थविरकल्पिक साधुओं में वैसे अतिशय और पुन्यराशि का अभाव होने से उनको वर्षाकाल बैठने के पेश्तर और ग्लानावस्था में अनंतकायजीवों की रक्षा के लिये अपने मलिन वस्त्रों को धो लेना चाहिये। देखो ! सूत्र की टीका का पाठ—

गच्छवासिनो हि अप्राप्तवर्षादौ ग्लानावस्थायां वा प्रासुकदकेन यतनया धावनमनुज्ञातं, नतु जिनकल्पिकस्येति।

आचाराङ्गसूत्र—शीलांकाचार्यटीका, १ श्रु०, ८ अ०, ४ उ०,

जरा आँखे खोल कर देख लो ! टीकाकार महाराजने कैसा उत्तम खुलासा कर दिया है ? इतने पर भी यदि हठाग्रह के वश न देख पडे तो तुम्हारे भाग्य की ही खामी है, इसमें दूसरे किसीका दोष नहीं है। ठीक ही है—जिनके कोर्स में, या भाडेती कोश में केवल अपवाद सेवियों की ही भरमार है, उन्हें इन शास्त्रीय बातों को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

देखने या समझने की जरूरत ही क्या है ?, उन्हें तो खाली अपवाद की माला से काम है ।

पू०—मलमलिन वस्त्र से लोगों के चित्त में ग्लानी होवे उसकों दूर करने के लिये वस्त्र धोना यह तो मंजूर है और अनाचारियों से सारे शासन का खोज मिल जाय तब भी रक्षा के लिये वर्ण पगावर्त्तन मंजूर नहीं?. पृष्ट–१६.

उत्त०—महानुभाव ! मलमलिन वस्त्र से जीवोपघात और श्रोताओं (लोगों) के चित्त में ग्लानी होना स्वाभाविक है । अतः वैसे मलिन वस्त्र को धो लेना तो शास्त्रसम्मत है, इसलिये वह सब कोई को निर्वाद मंजूर करना पड़ता है । परन्तु यतिशिथिल हुए उनसे जुदा भेद दिखाने के लिये वर्ण पगावर्तन करना शास्त्रसम्मत नहीं है, अतएव वर्ण पगावर्त्त की शास्त्र–विहीन बात कैसे मंजूर की जाय ?, हां अलबत्तां इस बात को वे लोग मंजूर कर सकते हैं जो अकारण को कारण मानकर शासन का खोज मिलाने के लिये रात दिन रंजनादि प्रवृत्ति में लगे रहेते हों ।

आज कल वर्ण पगावर्तन की प्रवृत्तिने शासन का कैसा खोज मिलाया है ? इसको जानने के लिये इसी पुस्तक के ' यह **शासन रक्षा के भक्षा** ' हेंडिंग के नीचे दिये हुए शासन–प्रेमियों के फिकरे वांचना चाहिये और अब भी शासनप्रेमीयों के इस विषय में कैसे उद्गार निकल रहे हैं. उनको भी देखिये !—

જેમ નાતરાંની છુટ જે કોમમાં હોય, તે કોમની સ્ત્રીયો સ્વ-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

તંત્રપણે રહે છે. અને પતિ પ્રત્યે જે ભક્તિ હોવી જોઈએ, તે નથી રાખતી. કારણ કે તે એમ સમજે છે કે ઘણી બહુ લપ્પડ સપ્પડ કરશે તો દુનિયામાં બીજા ઘણાએ તૈયાર છે એવી દશા આપણા સાધુ વર્ગની છે. છેવટે કોઈ સાધુ પાસે દાલ ન ગલે તો સ્વતંત્ર-રામ થઈને ફરે છે. કારણ કે જૈનસમાજ પીલાંની પાછળ મુગ્ધ છે. પીતવસ્ત્રધારી અને ઓઘો મુહપત્તી રાખનાર દેખ્યા. એટલે આદરભાવ તૈયારજ છે. એવું પૂછવાની કે જાણવાની જૈનસમાજ બીજીજ દરકાર કરે છે કે–તમે કોણ ? કોના શિષ્ય છો ? કેમ એકલા રખડો છો ? સમુદાયથી કેમ છૂટા પડ્યા છો ? વિગરે.....

ધર્મધ્વજ—વર્ષ ૪ થું. અંક ૨ જો તા. ૨૦-૧૦-૨૬.

પૂ૦—चातुर्मास की आदि में जो धोने का लिखा है वह भी अनंतकाय की विराधना मलिन वस्त्र पर फूल लग कर होवे नहीं, इसी के लिये ही शास्त्रकारने आज्ञा दी है, लेकिन किसी भी जगह पर चौमासे के सिवाय धोने की और चित्त ग्लानी के कारण से वस्त्र धोने की आज्ञा है ही नहीं. पृष्ठ १७-२०

उ०—महानुभाव ! इस लेख से आपका वह निश्चय-मन्तव्य कि जैन शास्त्र में वस्त्र धोने का है ही नहीं ' पाताल में चला गया। जरा अंधता को छोड कर सोचो कि मलिनवस्त्र पर फूल के लगने से विराधना होगी कि मखिन वस्त्र पर नीलफूल जमने पर उसके वापरने से जीव विराधना होगी ?। आप लोग जब एक मा-मूली बात को भी न समझ सके तब कहिये–पिशाचपंडित का नि-रक्षर विद्यार्थी कौन हुआ ?। बस मन में ही समझो ! नाम कहने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

की जरूरत नहीं। खैर जो धोना भी नहीं मानते थे, वे अब शास्त्रोक्तरीति से वस्त्र धोने पर तो मजबूर हुए।

अब रहा चौमासे के सिवाय धोने का सवाल। इस के लिये शास्त्रीय प्रमाण रूप में उत्तर पिशाचपंडिताचार्य के प्रियमित्र श्रीयुत चन्दनमलजी नागोरी के नाम पर निछरावल की हुई **वस्त्रवर्णसिद्धि** नामक पुस्तक का ४९ वें नम्बर का प्रमाण ही बस समझना चाहिये। वह यहाँ ज्यों का त्यों भावार्थ समेत उध्धृत कर दिया जाता है—

किमर्थं पुनर्विभूषां आसेवते ? इत्याह—" मलेण वच्छं बहुणा उ वत्थं उज्झाइगोऽहंवि विणा भवामि। हं तस्स धोवम्मि करेमि तत्ति, वरं न जोगो मलिणाण जोगो॥ ३१२॥" इदं मदीयं वस्त्रं बहुमलेन ग्रस्तं—आपूरितं, अतोऽनेनाहं 'उज्झागो' विरूपो भवामि, यतश्चाहं विरूप उपलभ्ये ततस्तस्य धौतव्ये तन्मिमहं करोमि, येन गोमूत्रादिना शुध्यति तदानयामित्यर्थः, कुत? इत्याह—वरं मे वस्त्रेण सह न योगः, परं मलिनवस्त्रप्रावरणादप्रावरणमेव श्रेयः इतिभावः, कारणे तु वस्त्रं धावन्नपि शुद्धः, परः प्राह—ननु वस्त्रधावने विभूषा भवति, सा च साधूनां कर्त्तुं न कल्पते ' विभूसा इत्थिसंसग्गी इत्यादि वचनात्। सूरिराह—" कामं विभूषा खलु लोभदोषा, तहावितं पाउणओ न दोसो मा हीलणिज्जो इमिणा भविस्सं, पुव्विड्ढिभाई इय संजईवि॥ ३१३॥ " कामं—अनुमतं एतत् खलुः अवधारणे भैषा विभूषा लोभदोष एव, तथापि तद्वस्त्रं शुचिभूतं कारणे कृत्वा प्रावृणवतो न दोषः, कस्य ? इत्याह—पूर्वं राजादिक ऋद्धिमान् आसीत् स तादृशीं

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ऋद्धिं विहाय प्रव्रजितः सन् चिन्तयति–मा अमुना मलक्लिन्नवाससा अबुधजनस्य इहलोकाप्रतिबद्धस्य हीलनीयो भविष्यामि– यन्नूनं केनापि देवादिना शापशप्तोऽयं यदेवमेतादृशीं ऋद्धिं विहाय साम्प्रतं ईदृशीं अवस्थां प्राप्तः, आदिशब्दादाचार्यादिरप्येवमेव शुचिभूतं वस्त्रं प्रावृणोति, संयत्यपि ऋद्धिमत्प्रव्रजिता नित्यं पाण्डुरपट्टप्रावृता तिष्ठति वा।

भावार्थः—साधु अपने मैले कुचैले वस्त्र देख मनमें विचार करे कि मैं ऐसे मलिन वस्त्रों से दुग मालूम होता हूं। इसलिये इन को स्वच्छ बनाने की तजबीज करुं तो ठीक है, एसे विचार से याने वस्त्रों का मलिनपना अप्रिय हो जाने के कारण उन्हें तत्काल शुद्ध करना चाहिये. ऐसे प्रयत्न में लग के गौमूत्रादि (क्षार वगैरह) जिनसे वस्त्र शुद्ध हो जाता हो उनको प्राप्त करने की कोशीश करे, और सोचे कि मुझे नवीन वस्त्र का संसर्ग न हो तो अच्छा क्योंकि मलिनवस्त्र पहिनने से तो न पहिनना अच्छा होता है। इस जगह टीकाकार विशेष स्पष्ट करते फरमाते है कि किसी खास कारण से वस्त्र धोनेवाला भी शुद्ध गिना जाता है. लेकिन शंका होगी कि 'वस्त्र धोने से शोभा होगी और मुनिको विभूषा करना उचित नहीं है' क्योंकि विभूषा और कंचन, कामिनी के संसर्गसे चारित्रवंत महात्मा तो अलग रहते हैं ? इसके उत्तर में भाष्यकार महाराज फरमाते हैं कि भो शिष्य ! शोभा--विभूषा है. वह लोभसंज्ञा से है, लेकिन उज्ज्वलवस्त्र पहिनने से कोई दूषित नहीं बन सक्ता। क्योंकि किसी ऋद्धिमान् महानुभावने या राज्यपुत्रने चारित्र ग्रहण किया

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हो और वह सांसारिक अवस्था में वैभवादि सामग्री से आनंदित रहा हो। उस वैभवशाली नर को मलीन वस्त्र से घृणा होना स्वाभाविक है। यदि वह मनुष्य चारित्रवान् है तथापि इच्छा करे कि मैं स्वेच्छ वस्त्र पहिनुं तो ठींक है। तो यह कदापि दूषित नहीं बन सकता। और यही आज्ञा साध्वियों के लिये भी है। इस समयसूचक आज्ञा से टीकाकार महाराज भी सहमत होते हुवे कहते हैं कि—

विभूषा जो है वह लोभदोष से ही है तथा कारणसे वस्त्र धोकर पहिनना युग नहीं है और न दोष है। लेकिन किसके लिये नहीं है वह बताते हैं—

कोई महानुभाव राज्यऋद्धि पाया हुवा था या वैभवशाली कोई धनिक साहूकार था और दीक्षित हो गया है। उसके मनमें विचार आया कि मैं मलिन वस्त्र से मूर्ख और अज्ञानी लोक से हलका दिखुंगा या सामान्य लोग मेरी निन्दा करेंगे या कहेंगे कि इसको किसी देवता—पिशाचने श्राप दिया जिससे यह ऐसी अनुपम अलभ्य ऋद्धि सिद्धी का त्याग कर साधु बन गया और अब मलीन वस्त्र पहिने फिरता है। ऐसा भाव मनमें उत्पन्न हो। वह साधु हो या साध्वी अच्छे वस्त्र को पहिने तो दूषित नहीं माना जाता।

वस्त्रवर्णसिद्धि. पृष्ठ ४१–४४.

वस्त्रवर्णसिद्धि पुस्तक के लेखक महाशयने सूत्र—पाठ के अर्थ करने में कितनी कपोल-कल्पना की है? यह बात अनुवाद को मूल—भाष्य—टीका के साथ मिलाने से पाठकों को स्वयं विदित हो

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जायगी। भला ! जिन्हें पूरा शब्दबोध नहीं और न पूरी हिन्दी लिखना याद। वे लोग भाष्य–टीकाकारों के मार्मिक प्रमाण-पाठों का अनुवाद कर लें, तो फिर विचारे विद्वानों को तो घास काटने के ही दिन उपस्थित होंगे। दर असल में दुनियां में ऐसे ही अनुवादकों के लिये यह कहावत चालू हुई है कि–' **बड़े बड़े वहे जायँ, गड्डूमियाँ थाह मांगे।** ' अथवा ' **जहाँ हाथी ऊंट वहे जायँ, वहाँ गदहा कहे पानी कितना ?** '

पाठको ! ऊपर दिये हुए भाष्य-टीका के पाठ में वस्त्रवर्णा-सिद्धि के अनुवादक ने ' **वरं मे वस्त्रेण सह न योगः** '—मुझे नवीन वस्त्र का संसर्ग न हो, ' **कारणे तु** '—किसी खास कारण से, और ' **शुचिभूतं वस्त्रं** '—अच्छा, उज्ज्वल, स्वच्छ आदि जो अर्थ किया है, वह बिलकुल उत्सूत्र (गलत–शास्त्र-विरुद्ध) है। क्यों कि भाष्य-टीकाकार मलिनवस्त्र को धोने का अधिकार कह रहे हैं, उसके बीच में उज्ज्वल–स्वच्छ वस्त्र को बताने की आवश्यकता ही क्या है ?। इस प्रकार के उत्सूत्र–भाषण के लिये पिशाच पंडिताचार्य को चपेटिका का चपेटा लगा देना ही बस होगा। वह यह कि— " **उस्सुत्तभासगाणं बोही णासो अणंत संसारो** "—सूत्रविरुद्ध बोलनेवालों का सम्यक्त्व नाश पाता है, अर्थात् वह मिथ्यादृष्टि गुणठाणे जाता है, और आइन्दे अनन्त संसार में रुलता है, इसी विषय में कलिकालसर्वज्ञ श्रीहेम-चन्द्रसूरिजी भी फर्माते हैं कि—

अल्पादपि मृषावादाद्, रौरवादिषु संभवः।
अन्यथा वदतां जैनी वाचं त्व ह ह का गतिः॥ १ ॥

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

—" स्वल्प मृषावाद से भी आदमी का जन्म सातमी नरक के रौरव आदि नरक स्थानों में होता है तो फिर जो लोग जिनेश्वर महाराज की वाणी को ही दूसरी तरह से बोले उसकी तो गति ही क्या होगी ? याने उसकी गति श्रुतज्ञानी नहीं जान सक्ता है कि कितने भव की होगी. "

देखो ! चपेटिका पृष्ठ १-२.

बस चपेटा लग गया । अब मूल मुद्दे की तरफ झुकिये ! भाष्य-टीका के उक्त पाठ और उसके अनुवाद से नीचे लिखीं तीन बातें निर्विवाद और निःसन्देह सिद्ध हो गई ।—

१ एक तो यह कि—वर्षाकाल के सिवाय के काल में भी स्वपर को घृणा (ग्लानी) पैदा करनेवाले मलिन वस्त्रों को गौमूत्रादि (क्षार वगैरह) से धो लेने में शोभा और दोष नहीं है ।

२ दूसरी यह कि—मलिन वस्त्र लोक में मूर्ख, अज्ञानी और हलका दिखानेवाले होते हैं और लोगों को वैसे मलिन वस्त्रों से निन्दा करने का मौका मिलता है अतएव मलमलिन वस्त्रों को यतना से धो लेना भाष्य-टीका सम्मत है ।

३ तीसरी यह कि—सांसारिक अवस्था में वैभवादि सामग्री से आनंदित रहा हो उस साधु साध्वी को मलिन वस्त्र से घृणा होने का कथन भाष्यकार का होने पर भी भाष्य में दिये हुए आदि शब्द को लक्ष्य में रख कर ' आदि शब्दादाचार्यादेरप्येवमेव ' टीकाकार महाराज के इस कथन से आचार्य, उपाध्याय, गणी,

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

गणावच्छेदक, रत्नाधिक, साधु और साध्वि को भी स्वपर को घृणा उत्पन्न करनेवाले मलमलिन वस्त्र को क्षार वगैरह से धो लेने में शोभा और दोष नहीं है।

आगे चपेटिका के पृष्ठ १८ में पिशाचपंडिताचार्यने आचाराङ्गसूत्र के 'नो धोएज्जा' इसकी टीका का अवतरण देकर इस बात की कोशीश की है कि यह पाठ स्थविरकल्पिक विषय का नहीं है, किंतु जिनकल्पिक विषय का है। कुलिंगियो ? जरा अंधता को एक तरफ रखकर उसी आचारांगसूत्र के 'नो धोएज्जा' पाठ की टीका को पूरी देखो तो सही, उसमें क्या लिखा है ?—

'एतच्च सूत्रं जिनकल्पिकोद्देशेन दृष्टव्यं, वस्त्रधारित्व विशेषणात् गच्छान्तर्गतेऽपि वा अविरुद्धम्।' अर्थात्—ये सूत्र जिनकल्पिक के उद्देश से दिखाये गये हैं परन्तु 'वस्त्रधारित्व' ऐसा विशेषण होने से स्थविरकल्पिक के विषय में भी समझ लेना विरुद्ध नहीं है। पर अरे बाबा ! अपवाद की मौज-मजाह लूटने में इतना देखने की फुरसद किसको है ? इससे अपने आप मूर्ख बन जाना अच्छा है, ऐसा करने से अनाचारों का मेवा चखने तो मिलेगा।

पू०—कपड़ा तो उज्ज्वल रखना है, बिना वाशिंग के टाइम वार २ धोना है, और शास्त्रकार के नाम से अपने अनाचार को छुपाना है, लेकिन अनाचारियों से बचने के लिये शास्त्रों के वाक्यों को सोचकर किया हुआ परावर्त्तन मान्य नहीं करना

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है, इतना ही नहीं, लेकिन शासन के धुरंधरों की निन्दा करनी है. पृ० १६.

उ०—विना वारिश की टाइम मल—मलिन वस्त्र को धो लेने का खुलासा भाष्य टीकाकारने कर दिया है अतएव अपवादियों के समान वार वार इस विषय की पुनरावृत्ति करना निरर्थक है। लेकिन यति शिथिल हुए, उनसे वचने के लिये शास्त्रों के वाक्यों को सोच कर नहीं, किन्तु महावीरशासन और शासन के धुरंधर आचार्यों की निन्दा करने के लिये ही वर्णा—परावर्त्तन किया गया है। यह बात गलत नहीं, अक्षरशः सत्य है। देखो !—

श्री महावीरस्वामीथी २१७५ वरसइं गच्छमांही गुणवंत गीतार्थ आगले पद प्रतिष्ठा अणपामता केटलाएक मुनिवेषी एकठा मल्या, तिणें पोतानी प्रतिष्ठा वधारवा, शिष्यादिकने सुखें सरस आहार पमाडवा, ८४ गच्छना यतिओनी हांणी देखाडवा, पोताने विषे साधुपणुं देखाडी गच्छांतरना श्रावकने व्युद्ग्राहित करवा, भद्रक श्रावकने लोलावी पोताना करवा निमित्ते श्वेत वस्त्र टाली ओलिया प्रमुखे रंगी नगर मांही फरवा लाग्या. पण ते पंचांगी तथा गच्छमर्यादा लेखे साधुने वस्त्र रंगवाज न घटे.

आनंदघन मुनि लिखित 'आगम विचार संग्रह' पत्र २० मो.

पू०—जिस तरह से वस्त्र धोने के कारण पिंडनिर्युक्ति में दिखाये हैं उसी तरह से वस्त्र रंगने के भी कारण और रीति भांति निर्युक्ति भाष्य और चूर्णिकारने साफ २ निशीथ सूत्र में दिखाये हैं. इस विषय का ज्यादा विवेचन हमारे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

परम मित्र की औरसे वस्त्रवर्ण की सिद्धि में लिखा गया है.। पृष्ट १६–२०.

उ०—प्रियवर ! आपके परम मित्र के नाम पर गिरवे रक्खी हुई ' वस्त्रवर्णसिद्धि ' नामकी पुस्तक शुरु से अखीर तक देखी। उसमें अंधभक्तों को कहने मात्र के लिये तो सौ प्रमाणों की भरमार की गई है। लेकिन उनमें ' गाड़ी लाड़ी वाड़ी के प्रेमि यतियों से जुदा भेद दिखाने के लिये महावीर वेश का परावर्त्तन कर डालना चाहिये ' ऐसे भाव का दर्शक एक भी प्रमाण–पाठ नहीं है। अतएव वीरशासन में साधु साध्वियों को निर्युक्ति भाष्य और चूर्णिकारों की आज्ञा से वस्त्र का धो लेना तो अच्छा है; परन्तु अकारण को कारण बनाकर रंगीन वस्त्र का रखना या वस्त्र को रंगना वीरशासन में अच्छा नहीं है।

पू०—वस्त्र और पात्र के लिये जो शास्त्रकारने कल्कादि (रंग) फर्माये हैं वह मान्य क्यों नहीं करना चाहिये ? दूसरे शब्दों को छोड़ दो, लेकिन वर्ण शब्द मे पांचों ही रंग आ जातें हैं, यह तो सोचना था. पृष्ट–२०.

उ०—महाशय ! अच्छी तरह सोच समझ कर ही कहा जाता है कि कारण उपस्थित होने पर पात्र को कल्कादि से शास्त्र में बताई हुई रीति के अनुसार जीवरक्षा के लिये यतना पूर्वक रंग लेना निर्दोष है। परन्तु वर्ण शब्द से पांचों ही रंग का ग्रहण होने पर भी वीरशासन में सूती और ऊनी सफेद कपडे के

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सिवाय रंगीन वस्त्र रखना, या करना दोष रहित नहीं होने से मान्य नहीं करना चाहिये।

दूसरी बात यह कि वस्त्र और पात्र को न धोने में और पात्र को निर्लेप रखने में जीवहिंसा होने की संभावना है, इसीसे शास्त्रकारोंने वस्त्र पात्र को धो लेने की और पात्रलेप की जो आज्ञा दी है वह जीवरक्षा के लिये ही है। वस्त्र धावन-विषय का खुलासा पेश्तर किया जा चुका है। पात्र लेप के विषय में देखो! 'वस्त्रवर्णसिद्धि' में आलेखित ८२ नम्बर का ही प्रमाण-पाठ—

स च लेपमधिकृत्योपदर्श्यते-इहाक्षस्य धुरि भ्रक्षितायां रजोरूपः पृथ्वीकायो लगति, नदीमुत्तरतोऽप्कायः लोहमयावपनघर्षणे तेजस्कायः यत्र तेजस्तत्र वायुरिति वायुकायोऽपि वनस्पतिकायो धूरेव द्वित्रिचतुरिन्द्रियाः सम्पातिमाः सम्भवन्ति, मद्दीभ्यादिचर्ममयनाडिकादेश्च घृष्यमाणस्यावयवरूपः पञ्चेन्द्रियपिंडः इत्थंभूतेन चाक्षस्य व्यञ्जनेन लेपः क्रियते इत्यसावुपयोगी।

—लेपका अधिकार बताते हैं— प्रथम तो उस गाड़ी के पइया में रजरूप पृथ्वीकाय लगता है, द्वितीय नदी उतरते पानी अप्काय लगता है, तीसरे लोहे की लाठ (धूरा) घीसने से अग्निकाय लगता है और जहाँ तेज का प्रभाव है वहाँ वायु होना ही चाहिये, और फिरता हुवा पइया स्वयं वनस्पतिकाय का बना है। बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, जीव उसमें गिरने का संभव है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसके सिवाय भैंस आदि के चमडे की नाड़ी का घर्षण होता है सो यह सर्व पंचेन्द्रिय पिंड हो जाता है। ऐसे गाडी के पइये का कीट लेकर जो लेप करता है उससे यह उपयोगी है।

वस्त्रवर्णसिद्धि—पृष्ठ ६८.

पाठको! इसी प्रकार ओघनिर्युक्ति, और निशीथसूत्र भाष्य-टीका चूर्णि आदि शास्त्रों में भी पात्र के लिये नाना लेपों की उपयुक्तता दिखलाई गई है। इसलिये पात्र में लेप लगाना अनुचित नहीं, उचित ही है। लेकिन वस्त्र रंगने के या रंगे हुए लेने के जो कारण शास्त्रकारने बताये हैं उनमें यतियों की शिथिलतारूप कारण नहीं बताया गया, अतएव वीर शासन में वस्त्र को रंगाने की और रंगे हुए वस्त्र रखने की प्रवृत्ति अनुचित ही मानने लायक है।

आगे चपेटिका के लेखक पिशाचपंडिताचार्यने पीतपटाग्रह-मीमांसा के पृष्ठ २७ से ३५ तक में आये हुए निशीथसूत्र व चूर्णि के विस्तृत लेख के लिये अपनी हार्दिक मलिनता को उगलते हुए भी मुद्दे की बात पर कुछ भी नहीं लिखा। परंतु "पापी-पिशाच, पेटभरने के लिये जन्म पाये हुए, कुतर्कानृतवादी, कुतर्कान्धवादी, कुटिलमति, अज्ञान का अंधेरा छाया हुआ, अज्ञानी, अधर्मी, आग्रहावृत, मूर्ख, उन्मार्गगामी, अपनी मनसा ही कच्चे जल से धोने की, विचारा, नरक में जानेवाला," इत्यादि वाक्यों से वारंवार पुनरावृत्ति करके चपेटिका के कोई पांच पेज काले किये हैं, जोकि लेखक की पिशाचता के दर्शक

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हैं। इन असभ्य शब्दों के लिये हमारे पास कोई उत्तर नहीं है। इस लिये इस प्रकार के असुन्दर वाक्य पिशाचपंडिताचार्य के मुख को ही सुशोभित करें। ठीक ही है कि—

"संसार एक प्रकार का कारागार है, इसमें भिन्न भिन्न रुचिवाले जीव कर्म जंजीर से जकडे हुए पडे हैं। उनमें अपने अपने कर्मों के अनुसार कोई व्यर्थ वितंडावाद में मस्त हैं, कोई निन्दा, मश्करी और दोषारोप करने में निमग्न हैं, तो कोई अपने जातिस्वभाव के कारण अनाचार सेवने और बुरे अल्फाज लिखने बोलने में ही अपनी बहादुरी समझते हैं। अपसोस ! ! अंधश्रद्धा का आशापाश भी विचित्र प्रकार का होता है, वह मनुष्यों को अच्छे मार्ग में प्रवेश करना तो दूर रहा, पर उसके संमुख भी नहीं होने देता।"

अपवाद सेवको ! याद रक्खो इस बुद्धिवाद के जमाने में जब तक निज मान्यता (गद्धाटेक) के लिये कोई शास्त्रीय पुख्ता प्रमाण पेश नहीं करोगे, तब तक वह सभ्य–समाज में आदर की दृष्टि से नहीं देखी जा सकती। प्रत्युत शास्त्र रहित मान्यता (गद्धाटेक) के लिये तो वही मुठरिया साहब के खिताब मिलेंगे कि—'सिंह फाल भ्रष्ट हो गया' 'अभिमान के बद्दल उड़ गये' 'गुजरात की कमाई, मालवा में गमाई' 'फाकं फाका भी फक हो गई' इत्यादि।

पू०—वस्त्र परावर्त्त की परम्परा शोभा के लिये नहीं हुई है लेकिन शासन की रक्षा के लिये ही हुई है, इतना होने पर भी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

जिसको शासन निन्दक पने की आदत ही हो गई है उसको क्या कहना चाहिये ?, पृष्ठ–२६.

उ०—चाहे किसी भी उद्देश को लक्ष्य में रखकर वस्त्र पगवर्त्त की परम्परा चालु हुई हो, इस विषय का हमे कोई विवाद नहीं है और न हम उस विषय का यहाँ विचार करना ठीक समझते हैं। लेकिन वर्त्तमान समय में वस्त्र परावर्त्त के आग्रही लोगों से शासन की शोभा नहीं, किन्तु निन्दा हो रही है। अगर स्पष्ट शब्दों में कह दिया जाय तो विचारे गाड़ी वाड़ी लाड़ी के प्रेमी आधुनिक यतियों की शिथिलता से भी वस्त्र परावर्त्तवाले चार कदम आगे बढ़ते जा रहे हैं, ऐसा शासनप्रेमियों के लेख से साफ जाहिर होता है। देखो !—

पंन्यासजी * * એ વડનગરની અંદર સાધ્વી + + શ્રીની ચેલીને બડી દીક્ષા આપતી વખતે રૂ૦ ૧૧૦૦) લઇ બડી દીક્ષા આપી અને તેમના પિતાને ઘરે મોકલાવ્યા, તો રૂપિયા લઇને બડી દીક્ષા આપવી એ કયા શાસ્ત્રમાં છે ? વલી તેમણે અમદાવાદથી લીંબડી નિવાસી શાહ * * કે જેઓ મેસાણા–પાઠશાલામાં અભ્યાસ કરતા હતા તેમને અમુક રૂપિયા આપી દીક્ષા લેવા બોલાવ્યા તો પુછવાનું કે આવી રીતે છોકરાઓને છાની રીતે ન્હસાવવાથી શું સાધુઓનો વંશ રહેવાનો છે.

પન્યાસ * * ના શિષ્ય મુનિ * * (જેઓ હાલ પંન્યાસ પદે છે) જેમને પંન્યાસ પદવી આપવા પંન્યાસજી * * પાસે મોકલવામાં આવ્યા તો રૂ. ૮૦૦) લીધા પછી પન્યાસ પદવીના યોગોદ્વહન કરાવ્યા તો સાધુઓને રૂપિયા લઇ શું પોતાનું કુટુંબ

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

નિર્વાહવું હતું કારણ કે તેમણે દીક્ષા પૈસા લેવાવાસ્તે લીધી છે કે શું ?

જૈન પુ૦ ૧૬, અંક ૩૫, તા૦ ૧-૯-૧૮.

बस समझलो कि शासनप्रेमी के ऊपर के लेख से शासन-निन्दकपने की आदत किसकी होगई है और ऐसे शासन की निन्दा करानेवालों को क्या कहना चाहिये ?, हमारी राय से तो शासन के ध्वंशक और दीर्घसंसारी। दर असल में इसी बात को **उत्सर्गमार्ग को छोड कर उन्मार्गगामी** होना समझना चाहिये.

आगे पिशाचपंडिताचार्यने चपेटिका के २७-२८ वें पेज में अपनी मानसिक मलिनता का दृश्य दिखा कर चलती हुई मूल बात को उड़ा देने के लिये जीर्णप्राय शब्द के मार्मिक अर्थ को समझ लेने के वास्ते आजीजी की है। इसलिये लेखक की आजीजी को लक्ष्य में रख कर जीर्णप्राय शब्द के विषय में इतना युक्तियुक्त खुलासा कर देना चाहिये कि—

संयमयात्रा सुख पूर्वक निर्वाह हो, इस हेतु से साधु साध्वियों को वस्त्र रखने की आज्ञा हुई है। इसलिये जिन शास्त्रकारोंने धवल, जीर्णप्राय, अल्पमूल्य, और शुद्ध आदि वस्त्र के विशेषण दिये हैं, उनके कथन से उन्हीं विशेषण विशिष्ट वस्त्र ग्रहण करने का अभिप्राय जाहिर होता है और जिन ग्रन्थकारोंने केवल धवल, जीर्णप्राय वस्त्र ही रखने का लिखा है। उनने जीर्णप्राय शब्द से ही वस्त्र की अल्पार्थता को प्रदर्शित कर दी है। क्योंकि जो वस्त्र सादा, और अभिमान-दर्शक नहीं है वह अल्पमूल्य ही होता है।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अतएव वीरशासन में बकजड साधु साध्वियों को वर्ण से सफेद, मूल्य से थोड़ी कीमतवाला, जीर्णप्राय से जूना नहीं, पर जूने के समान, और शुद्ध से निर्दोष आदि विशेषणवाले वस्त्र ग्रहण करने या रखने की आज्ञा दी गई है ।

जो वस्त्र मूर्छा, भय, अभिमान और अधिक मूल्य के कारण हों वैसे वस्त्र रखने और लेने के लिये साधुओं को आज्ञा नहीं है । हां अलबत्तां उक्त प्रकार के सितादि विशेषणवाले वस्त्र कहीं हाथ न आवें और वस्त्र रहित रहने की सामर्थ्य न हो, तो उस साधु के लिये न्यूनाधिक विशेषणवाले वस्त्र भी अभावदशा में ग्रहण कर लेना निर्दोष समझा जा सकता है। परंतु वर्त्तमान समय में शास्त्रोक्त विशेषणवाले वस्त्रों की सर्वत्र सुलभता है, अतएव श्वेत, मानोपेत, जीर्णप्राय, शुद्ध और अल्पमूल्य आदि विशेषण विशिष्ट ही वस्त्र साधु साध्वियों को ग्रहण करना चाहिये ।

पू०—रंगने (रंग बदल करने) से नये वस्त्र की नवीनता नहीं चली जाती. इस जगह पर सोचने का है कि किसने कहा कि रंगने से नवीनता चली जाती है, लेकिन अकलमंद आदमी अच्छी तौर से समझ सक्ता है कि सफेद नये वस्त्र को रंगने से नये की झलक चली जाती है. पृष्ठ–२८.

उ०—प्रियवर मित्र ! आपकी मंद अक्ल के खजाने को देख कर विचारने से यही मालूम हुआ जब नये वस्त्र की रंगने से नवीनता नहीं जायगी, तब भला उसकी झलक भी कैसे चली जायगी ? क्योंकि नये कपड़े को रंगने से पहले की अपेक्षा दूनी झलक आ जाती

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

है, जो विशेष शोभा की कारण बन कर मोहक–पदार्थों पर अपना प्रभाव डाले विना नहीं रह सकती। कहिये ! फिर वह झलक क्या अपवादियों को मौज–मजाह उडाने में मददगार नहीं होगी ?, धन्य है महाशय ! तुम्हारी झलक गमाने की विधि को, और धन्य है आपके अकलमंदी आदमी पन को कि जिसके जरिये नये वस्त्र को झलक गमाते गमाते रंगने से दूनी झलक और शोभा के कामी वना दिये गये।

पू०—कामशास्त्र के हिसाबसे जब उस सफेद वेषवाला कामी गिना गया है तो यह ऐहिक कामना का विषय यह सफेद वस्त्रवालों को क्यों नहीं लागु हुआ और इसीसे शास्त्रकारने भी सफेद वस्त्रवाले को वकुश में ही गिना है और सफेद वस्त्र पहन कर पडिक्कमणा करनेवाले को द्रव्य आवश्यक करने वाला ही कहा है. पृष्ठ २९.

उ०—मालूम पडता है कि लेखकने पालीताणा की अंधारी जिस कोटडी में कामशास्त्र का शान्तिपाठ पढाया था, उसीके याद आने से अथवा वैसे ही प्रसंग में बैठे हुए सफेद वस्त्रवालों पर ऐहिक कामना का विषय लागु किया है। पर पिशाचपंडिताचार्यजी ! खूब अच्छी तरह समझलो कि सफेद वस्त्रवाले तो किसी अपेक्षा से वकुश में भी गिने जा कर, उनका प्रतिक्रमण द्रव्य आवश्यक में भी गिना गया है, लेकिन रंगीनवस्त्रवाले जो अकारण को कारण बना कर मूलगुण को बरबाद करने में भी नहीं लजाते और जिनके लिये शासनप्रेमियोंको काले वावटों की तैयारी

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

करनी पडती हैं। इतना ही नहीं, लेकिन शासनरसिक घरभेदु मणिविजयजी को उपधान की रंगशाला विखेरने के लिये हेन्ड-बिल भी निकालना पडते है, उनको तो शास्त्रकारने वकुश में भी नहीं गिना और न उनके पडिक्कमण को द्रव्य आवश्यक में ही गिना। कहिये लेखक महाशय! भगवान् वीरप्रभु के श्रमण और उनके शासनानुयायी हरिभद्रसूरि, विजयहीरसूरि आदि कई सफेद कपडे रखनेवाले ही थे, तो क्या वे आपके कामशास्त्र के हिसाब से कामी और वकुश थे? और उनका प्रतिक्रमण द्रव्य आवश्यक में था?

पाठको! देखा पिशाचपंडिताचार्य की अक्लमंदी का खजाना, जिसमें वीरप्रभुके श्वेतवस्त्रधारी मुनिवरों को, हरिभद्राचार्य और जगद्गुरु विजयहीरसूरिजी जैसे प्रखर शासननायकों को भी वकुश ठहराने और कामी बनाने की धीठता भरी पडी है। ऐसे शासन-निन्दकों को जिनाज्ञा–भंग करने के दोषी भी कह दिये जाय तो कोई हरकत नहीं है। अथवा ऐसे कलंकारोपी लोगों के लिये रत्ता भस्म और भस्मी शब्द एकार्थतारूप से रूढ कर दिये जायँ तो अनुचित नहीं है। ठीक ही है कि–'आग्रहकी दृष्टि संसार में किस अनर्थ को नहीं कराती?'

पू०—जो आज काल वर्णपरावर्त्तित वस्त्रवाले हैं वो ही पूजने लायक गिने गये हैं और त्यागी माने गये हैं और यही बात इस कुतर्कानृतवादि को द्वेष करने वाली हुई है, इसीसे इसने संवेगी शासनरक्षकों की निन्दा शुरू की है पृष्ठ–३०.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ઉ૦—મહાશય ! નિન્દક વે કહે જાતે હૈં જો શુદ્ધ સફેદ કપડે વાલે મુનિવર્ગો ઔર દિગમ્બર શાસનનાયકો કો વકુશ ઔર કામી ઠહરાતે હૈં. જૈસા કિ તુમને ચર્ચેટિકા કે પૃષ્ઠ ૨૬ મેં કામ-શાસ્ત્ર કે હિસાબ સે...સફેદ વેષવાલા કામી ગિના ગયા હૈં ' યહ લિખા હૈ । યહ સફેદવેશ કો કામી માનનેવાલા કામશાસ્ત્ર જિનકે ઘર મેં વિલાસ કરતા હૈ વહી લોગ નિન્દક કહાતે હૈં । વિદિત હોતા હૈ કિ પિશાચપંડિતાચાર્ય કે વર્ણપરાવર્ત્તિત વસ્ત્રવાલે અપવાદગ્રાહિયોંને દુનિયા સે પૂજને લાયક ગિનાને ઔર ત્યાગી મનાને કા ઠેકા (કંટ્રાટ) લે લિયા હૈ, ઇસસે દૂસરા તો કોઈ ઉનકા અધિકારી માનો ! રહને પાવેગા હી નહીં । પરન્તુ આશ્ચર્ય હૈ કિ ઐસા ઠેકા લે લેને પર ભી વર્ણ પરાવર્ત્તિત વસ્ત્રવાલોં કે લિયે શાસનપ્રેમિયોં કો તો સમય સમય પર ઉનકી યોગ્યતા ઔર ત્યાગિતા કો જાહિર કરના હી પડતી હૈ । દેખો :—

આજ કાલના જમાનાને અનુસરનારા અને મુનિના વેશને લજવનારા તથા અંધશ્રદ્ધાલુ શ્રાવકોની પાસે પુજવનારા એવા પંન્યાસ * * તથા * * કે જેઓ ચોમાસા (પર્યુષણ) માં આઠ વ્યાખ્યાન વાંચવા જતી વખતે શ્રાવકો પાસેથી અમુક રૂપિયાની શરતે પોતાના પરિવાર પૈકી કોઇ સાધુને મોકલે છે કે જેઓને શબ્દરુપાવલીનું પૂરું જ્ઞાન પણ હોતું નથી તેવા સાધુઓથી જૈન કોમને શું ફાયદો થવાનો.

જૈન પુ૦ ૧૬ અંક ૩૫. તા૦ ૧-૬-૧૮

તેમજ * * ના ભાવનગર, જામનગર, પાટણ અને સૂરતમાં ફજેતા થયા છતાં વહાલો થઇ છયોક પૂજાય છે, ત્યાં તેઓ પાસે

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

ગર્ભપાતની દવાઓ રખાય છે. * * * * ચાર વખત ભ્રષ્ટ થયા છતાં તેનું પંન્યાસપદ કાયમ રહે ને હજાર હજાર રૂપિયા પંન્યાસપદ આપતાં રોકડ લે. શ્રાવકો જેમ દીકરી વેચી દ્રવ્ય ઉપજાવે તેવી દશા થાય છે,

જૈન પુ० ૧૬, અંક ૩૮, તા. ૨૯-૯-૧૮.

महानुभावो ! कहो, आपके वर्ण परावर्त्तित वस्त्रवालों की क्या इसी योग्यता को पूजने लायक और त्यागी मानी गई है ? अगर ऐसे ही आपके घर के साधु पूजने लायक और त्यागी गिने जायँ तो फिर संसार में त्यागियों को ढूंढने की या त्यागियों का स्वरूप जानने की आवश्यकता ही न रहेगी। अतएव ऊपर मुताबिक सत्य वस्तुस्थिति को प्रकाशित करनेवाले शासनप्रेमियों के लेखों को यदि कोई अपवादसेवक निन्दा समझ लेवे, तो इस विषय में हम निरुपाय हैं, अर्थात् इसके प्रतिकार का हमारे पास कोई उपाय नहीं है। सत्य है कि ऐसे पूजने लायक और त्यागी माने जानेवालों के लिये '**धत्तेऽथ पीतं पटमूर्ध्वदेशे, शुक्लं कटौ मोदकमीहमानः**' विद्वानों का यही शिरपात्र दे देना युक्ति-युक्त है।

पू०—भाष्यकार महाराज शरीर के एक भाग में या सर्वभाग में सफेद कपडे रखने वाले को वकुश गिनते हैं, और इधर ही मरीचि वचन में पृथ्वीकायका भेद जो गेरुक है उससे रंगनेवाले को काषायिक दशा दिखाई है. न कि सर्व रंगनेवाले की; इतना ही नहीं लेकिन कषायवाले को कषायला वस्त्र रखना यह शास्त्रकार का सिद्धान्त होवे तो जरूर क्षपकश्रेणी लगाकर अकषाय दशा न होवे तब तक अकषायित वस्त्र रखने की ही आज्ञा होना चाहिये पृष्ठ—३१.

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

उ०—प्रियवर ! आपके पक्ष का समर्थन करने के पेश्तर हम यह पूछना चाहते हैं कि सर्वमान्य भगवान् श्रीऋषभदेवस्वामी और श्री महावीरस्वामी के शासन में जो साधु साध्वी एकदेश या सर्वदेश से शास्त्रोक्त मर्यादा पूर्वक शरीर पर सफेद कपडे रखते थे वे क्या आपके भाष्यकार के हिसाब से वकुश गिने जाना चाहिये ? यदि कहा जाय कि नहीं, तो फिर आपके सिवाय ऐसा कौन दुर्बुद्धि है जो शास्त्र मर्यादा से सर्वदेश या एकदेश से शरीर पर सफेद वस्त्र रखने वाले शासन नायकों को वकुश में गिनने का साहस करे ?

आश्चर्य है कि पिशाचपंडिताचार्य के भाष्यकार में जीर्णोद्धार के बहाने से इकट्ठी की हुई रकम से चा, दूध, सीरा, पूडी खानेवाले उपधान के बहाने मेवा मिष्टान्न डटके उडानेवाले, तस्करवृत्ति से लोगों के लडके उडा ले जाने वाले, और केशरिया वागाओं में छिपकर अनाचार करनेवाले शोभादेवी के उपासक भ्रष्टाचारी तो वकुश की गिनती में नहीं है; पर जो वीरशासन की शुद्ध परम्परानुसार श्वेत वस्त्र के धारक, साधुयोग्य संयम क्रिया में दत्तचित्त, अनाचार और गाडी वाडी लाडी के प्रेम से बिलकुल अलग रहनेवाले साधु हैं वे वकुश की कोटी में गिने गये हैं। पाठको ! आप समझ सकते हैं कि पिशाचपंडिताचार्य का भाष्यकार कितना विलक्षण है ? जो संयमी-श्रमणों को पतित और अनाचारियों को उत्तम दिखाता है। अब सोचिये इससे अधिक फिर उन्मत्त प्रलाप क्या हो सकता है ? अतः ऐसे उन्मत्त प्रलापियों को मिथ्यादृष्टि काषायित वस्त्र वाले सर्वदेशी तापसों से भी कनिष्ट कह दिये जायँ तो अतिशयोक्ति नहीं है।

भला ! सोचो तो सही कि मरीचि के वचन में शास्त्रकार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

महाराजने काषायिकदशा का उत्पादक हेतु क्या बताया है ? " अकलुषितमतयो यतयः, नाहमेवमतो मे कषायकलुषितस्य धातुरक्तानि वस्त्राणि भवन्तु—साधु कषाय रहित मतिवाले होते हैं, मैं वैसा नहीं हूं, अतः कषायकलुषित मतिवाले मुझको धातु (गेरु) से रंगे हुए वस्त्र हों " किरणावलीकार के इस कथन से साफ जाहिर होता है कि मरीचि को कापायिक दशा का उत्पादक हेतु कषायकलुषितमति है, न कि रंग से रंगना, और खुद की कषाय कलुषित मति मान करके मरीचिने धातुरक्त वस्त्र धारण किये हैं। अब कहिये! कषायवाले को कषायला वस्त्र रखना ऐसा मरीचि का सिद्धान्त हुआ या नहीं ?, यदि हुआ तो बस, हम भी यही कहते हैं कि कषाय कलुषित मतिवाले लोगों के लिये धातुरक्त वस्त्र हैं। अगर ऐसा नहीं होता तो मरीचि को 'सुकंबरा य समणा, निरंबरा' ऐसी विचारणा करके धातुरक्त वस्त्र रखने की जरूरत क्यों पडती ? दूसरी वात मरीचि की विचारणा में यह भी मिलती है कि सफेद कपडों के धारक और विलकुल कपडे रहित ये दो तरह के शुद्ध मुनि होते हैं। इससे सफेद कपडे रखना ही शुद्ध मुनिवर्गों के लिये सिद्ध है।

पू०—शासनरक्षकों में दुराचारी से शासन को बचाने के लिये ही शास्त्राज्ञानुसार वर्ण परावर्त्तन किया है लेकिन क्या करे ? अकल के ओथमीरों को रक्षा को भस्मी समझाने का और कारण को पुष्पवती का कारण समझने का अकल में आया है. पृष्ठ—३२.

उ०— शासन को बचाने क लिये नहीं और शास्त्राज्ञानुसार

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

नहीं. किन्तु मतिकल्पना से शासन को कलंकित करने के वास्ते ही वर्ण परावर्त्तन वर्त्तमान में जारी है यह बात अब अक्कल में अच्छी तरह आ चुकी है और इसके प्रमाण के लिये शासनप्रेमियों के फिकरे मौजूद हैं। जिनमें से कुछ नमूने पेश्तर लिख दिये गये है। इसलिये ऐसे अक्कल के ओथमीर मनोमतियों के लिये रत्ना को भस्मीरूप में रूढ करना और उन ओथमीरों के कारण को पुष्पवती का कारण समझना अनुचित नहीं, उचित ही है। पाठको! चपेटिका के लेखक के भाष्यकार के 'दुराचारी से शासन को बचाने के लिये ही' इस सूत्र की व्याख्या भी कैसी उत्तम है? इसको भी देखलो—

ત્યારે કેટલાક કહે છે કે—એમણે બધાઓને નીચેના હોલમાં સુવાડી પોતે એ....ને લઇને ઉપરની ઓરડીમાં એકલા સુવાનું શું કારણ? વલી કોઇક તો કહે છે કે—આ બધી ગડમથલ લાંબી મુદતથી ચાલ્યા કરતી હતી. ત્યારે કેટલાકો તો એમ કહે છે કે—એક સમુદાયથી અનેક ગુન્હાઓમાટે રિસમિસ થયેલ એ ....ને રાખ્યો છે, એજ મ્હોટું પાપ વહોર્યું છે. જ્યારે કેટલાક તો કહે છે કે- એમાં પાપ જેવુંજ શું છે? ત્યાં કયાં નવલાખ જીવોની હિંસા થવાની હતી? ગમે તેમ હોય-સાચું ખોટું જ્ઞાની જાણે. ફક્કડને કયાં સ્નાન-સૂતક કરવું પડે તેમ છે?

ઘડીમરની ગમ્મત, ખેલ ૪ થો, પૃષ્ઠ ૪.

आगे चपेटिका के लेखक महाशयने 'अत्थं भासइ अरहा' इस सूत्र-वाक्य से यह सिद्ध करने की कोशीष की है कि—सूत्र तीर्थंकर प्ररूपित नहीं है। भला! सोचो तो सही कि—जब तीर्थंकर

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

अर्थ को कहते हैं, तो कहना, प्ररूपणा दोनों शब्दों का मतलब एक हुआ या नहीं? और इससे ऐसा सिद्ध होने में क्या कसर रही कि-तीर्थंकर महाराज के कहे हुए अर्थों को गणधर आदि सूत्र रूप से गुम्फित करते हैं, वे सूत्र तीर्थंकर के प्ररूपित (कहे हुए) और गणधरों के रचित हैं। पर अनृत कुतर्कों से वादि होनेवाले पिशाचपंडिताचार्य को ऐसा अर्थ भासमान कहांसे होवे ?

पू०—समझना चाहिये कि शास्त्र में वस्त्र का सारा ही अधिकार पात्र के समान कहा है तो पात्र रंगने की जहाँ आज्ञा मिलेगी वहाँ ही वस्त्र रंगनेकी आज्ञा हो जायगी कि नहीं ?. पृष्ठ–३३.

उ०—महानुभाव ! अच्छी तरह समझ लिया कि जिन शास्त्रनिर्दिष्ट कारणों पर पात्र को रंगने की आज्ञा है, वह ठीक है और उसके अनुसार पात्र को रंग लेना निर्दोष है। परन्तु निशीथसूत्र, चूर्णि, भाष्य और टीका में वस्त्र का अधिकार पात्र के समान होने पर भी जो कारण बतलाये गये हैं. उनमें यतिशिथिल हुए उनसे जुदा भेद दिखाने, अथवा दुराचारी–यतियों से शासन को बचाने के लिये वस्त्र रंगना या रंगे हुए वस्त्र रखना चाहिये इस भाव का दर्शक कोई कारण नहीं है; इसलिये इस कारण को मान कर शास्त्र में वर्णपरावर्त्तित वस्त्र रखने की आज्ञा वर्त्तमान में नहीं है।

इसी प्रकार 'अप्पत्तेचिय वासे०' इस पिंडनिर्युक्तिसूत्र और 'अप्राप्तवर्षादौ ग्लानावस्थायां०' इस आचारांगटीका के अनुसार वर्षाकाल के नजदीक के टाइम में सर्व उपधि को धो लेना; और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

' मलेण वच्छं बहुणा उ०-इदं मदीयं वस्त्रं बहुमलेन ग्रस्तं० ' इत्यादि भाष्य-टीकाकार की आज्ञा से स्व-पर को ग्लानी करनेवाले मलाविल वस्त्र को वारिश के सिवाय भी धो लेना चाहिये। निशीथचूर्णि में ' एवमादीएहिं कारणेहिं० ' ऐसा कह कर जो बहुत ही कारण दिखाये हैं उनमें यतियों की शिथिलता के कारण की गंध तक नहीं है और चूर्णिकार महाराज के दिखाये हुए कारण वर्त्तमान में प्रायः उपस्थित नहीं है । अतएव वस्त्र वर्ण परावर्त्तन करना महावीर शासन में अनुचित ही है।

यदि कहा जाय कि—उत्तराध्ययनसूत्र टीकाकारने ' वेषविडम्बकादयोऽपि वयं व्रतिनः ' इस वाक्य से वेषविडम्बकों से साधुओं का जुदा वेश लोगों के विश्वासके लिये स्वयं प्रतिपादन किया है ?, परन्तु इस खुलासे में उन्हीं टीकाकारने वर्द्धमानविनेयानां हि रक्तादिवस्त्रानुज्ञाते वक्रजडत्वेन वस्त्ररञ्जनादावपि प्रवृत्तिः स्यादिति न तेन तदनुज्ञातम् । ' इन वाक्यों से वर्द्धमान स्वामि के शिष्यों को वस्त्ररंजनादि प्रवृत्ति का स्वयं निषेध कर दिया है। इससे वर्द्धमान भगवान् के शासन में यतियों की शिथिलता का कारण रहने पर भी उनसे जुदा भेद दिखलाने के लिये वस्त्र का रंगना सिद्ध नहीं है, किन्तु शास्त्रोक्त मर्यादा से सफेद वस्त्र ही रखना सिद्ध है। लेकिन जिन लोगों का अथवा यों समझिये कि पिशाचपंडिताचार्य का हृदय-भवन अनृत कुतर्कों की वादि से वासित है, उनको शुद्ध समझने का रास्ता कहां से मिल सकता है ? उन्हें तो केवल अपवाद के परदे में बैठ कर मनोकामना ही सिद्ध करनी है ।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

चेलेंजनिरीक्षण—

" संसार में कईएक मनुष्य ऐसे भी होते हैं. जो गिर चुकने, भाग जाने और सर्वप्रकार से हताश होने पर भी स्वयं बहादूर बनने के लिये अपने अन्धभक्तों का शरण लेकर जयशील होने का प्रयत्न करते हैं। अगर निष्पक्षपात होकर कह दिया जाय, तो ऐसे ही दुर्बल मनुष्यों के लिये संसार में ' **मियाँ गिरे तो टंगडी ऊंची** ' और ' मुक्की से पापड तोड़े, कच्चा तोड़ा सूत। मृत मक्खि के पंख उतारे, हम हैं बहादूर पूत ॥ ' ये कहावतें बनी हैं। "

बस यही अनुकरण अनृत कुतर्कों से वादि होनेवाले महाशय **आनंदसागर**–सागरानंदसूरिजीने किया है। क्योंकि वे अब अपनी उज्ज्वलकीर्त्ति को पलायन और पराजयरूप कोयलों से काली किये बाद यद्वा तद्वा उन्मत्त प्रलाप करके चपेटिका के द्वारा जाहिर करते हैं कि—

शास्त्रार्थ के लिये तुमको रतलाम में चेलेंज देने में आया था लेकिन तुमने शास्त्रार्थ से निर्णय करने के पेश्तर ही पराजय मंजूर कर लिया था. फिर भी तुमको शास्त्रार्थ में हाजिर होने का मौका हम लाते, लेकिन चौमासा उतरने के पेश्तर ही महाराजा रतलाम के दिवानसाहब की तरफसे जज साहबने आकर इस्तिहारबाजी होने की दोनों पक्षवालों को मनाई की. पृष्ठ–३६.

महानुभाव ! अब तुम्हारी इस असत्य–निर्बल पोपलीला को कोई सत्य मान लेवे यह स्वप्न में भी न समझों। क्योंकि उसी समय शासनप्रेमी विवेकचंद्र नामक श्रावकने बम्बईसमाचार और

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हिन्दुस्थान दैनिक पत्र में तुम्हारी सारी बनावटी पोपलीला को हुबोहुब पब्लिक आम में जाहिर कर दी है। देखो ता. १२–१२–२३ का दैनिकहिन्दुस्थान। जो इसी पुस्तक में ' हेन्डबिल किसने गेकाये ' इस हेन्डिंग के नीचे ज्यों का त्यों उद्धृत है। दूसरा बम्बई–समाचार का भी लेख अवलोकन करलो—

જૈન સાધુઓ અને સાધ્વીઓએ કેવાં વસ્ત્રો ધારણ કરવાં?

લગભગ સાત મહીનાથી રતલામ (માળવા)માં શ્રી ૧૦૦૮ શ્રી જૈનાચાર્ય ભટ્ટારક શ્રી રાજેન્દ્રસૂરીશ્વરજી મહારાજના શિષ્ય શ્રીમાન્ વ્યાખ્યાન વાચસ્પતિ મુનિ શ્રી યતીન્દ્રવિજયજી મહારાજ અને શ્રી ૧૦૦૮ આચાર્યજી શ્રી સાગરાનંદસૂરિજીની વચ્ચે જૈન સાધુને જૈન શાસ્ત્રોના આદેશ પ્રમાણે ધોળાં કપડાં પહેરવાં કે રંગેલાં પહેરવાં જોઇએ? તેની ચર્ચા ચાલતી હતી. તેમાં શ્રીમાન્ યતીન્દ્રવિજયજી મહારાજે પ્રાચીન અર્વાચીન જૈન શાસ્ત્રોના પ્રમાણપાઠ સાક્ષર જૈનસમાજ આગળ હેન્ડબીલો દ્વારા આપી જૈન સાધુ–સાધ્વીઓને વર્ત્તમાનકાળમાં સનાતન રિવાજ પ્રમાણે શ્વેતજ વસ્ત્ર ધારણ કરવાં, રંગીન નહિં, એમ સિદ્ધ કરી બતાવ્યું હતું અને શ્રીમાન્ સાગરાનંદસૂરિજીને હેન્ડબિલો દ્વારા સૂચના આપી હતી કે ' અપવાદથી સાધુઓને પીળાં વસ્ત્રો રાખવાં ' એવી રીતે આપ કહો છો તો તેની સિદ્ધિ માટે શાસ્ત્રપ્રમાણ જાહેર કરો; પરંતુ અત્યારસુધીમાં તેમના તરફથી કોઈ પણ પ્રમાણ જાહેર થયું નહિં. તેથી સ્થાનકવાસી, દિગંબર વિગેરે રતલામના લોકોમાં જણાઇ આવ્યું છે કે તે સંબંધમાં શાસ્ત્રપ્રમાણ હોવું ન જોઇયે. સાગરજીએ શ્રીયતીન્દ્રવિજયજીના હેન્ડબીલોના જવાબ આપી ન શકતાં શ્રીમાન દીવાનસાહેબ સ્ટેટ રતલામના પાસે હેન્ડબીલો વંદ કરાવવા

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

અરજ કરવામાં આવી અને દયાલુ શ્રીમાન્ દીવાનસાહેબે તે અરજ ધ્યાનમાં લઇને દીવાલીના દિવસે શ્રીજજસાહેબ સ્ટેટ રતલામને મહારાજ શ્રીમાન્ યતીન્દ્રવિજયજી પાસે અને શ્રીસાગરજીની પાસે મોકલાવી બન્ને તરફના હેન્ડબિલો મુલતવી રખાવ્યાં છે. ખુશી થવા જેવી બાત એ છે કે શ્રીમાન્ સાગરાનંદસૂરિજીએ પોતાના શરીરપર પહેરતા વસ્ત્રોમાં સફેદ વસ્ત્રને મુખ્યસ્થાન આપવા શરૂ કરી દીધું છે. શાંતિ: ! શાંતિ: !! શાંતિ:

મુમ્બઇ સમાચાર, પુ. ૧૦૪, અંક ૨૮૫, ૧૪ ડિસેંબર સન્ ૧૯૨૩.

ઇસસે સાગરજી કી સત્યતા ઔર કુટિલતા કા પૂરા પતા લગ જાતા હૈ, ઇસલિયે ઇસ વિષય કો વિશેષ સ્પષ્ટ કરને કી આવશ્યકતા નહીં હૈ। ક્યોંકિ સાગરજી કી અસત્ય કે પરદે સે આચ્છાદિત સભી પોપલીલા કા પોકલ અબ ખુલંખુલા હો ચુકા હૈ ઔર ઉસકો આબાલ વૃદ્ધ સભી અચ્છી તરહ જાન ચુકે હૈં। અતએવ અબ વે અપની ગિરી દશા કો ચાહે કૈસે ભી અસત્ય લેખોં કે રૂપક સે સુધારને કા ઉદ્યોગ કરેં, પરન્તુ વહ કિસી કે વિશ્વાસ લાયક નહીં હો સકતી।

આશ્ચર્ય હૈ કિ ચાર ચાર દફે શાસ્ત્રાર્થ કે લિયે પ્રતિજ્ઞા પૂર્વક મુદ્રિત ચેલેંજ દિયે ગયે ઔર શાસ્ત્રાર્થ કો સમઝાને કા પૂરા પ્રબન્ધ ભી કિયા ગયા। ઇસસે ઘબરા કર, નહીં નહીં નિર્બલતા કે કારણ રતલામ સે ઐસા નિશિ–પલાયન કિયા કિ ઠેઠ કલકત્તા મેં જાકે સાંસ લિયા ઔર અબ દો–ઢાઈ વર્ષ બીતને બાદ અંધભક્તોં કે શરણ મેં ગિર કર અપની બહાદુરી કા તૌલ બતાના શુરૂ કિયા હૈ। ભલા! ઇસ બહાદુરી કો મૂર્ખ અંધભક્તોં કે સિવાય દૂસરા કૌન સરાહ સકતા હૈ? ઇસ વિષય મેં એક વિદ્વાન્ને ઠીક હી કહા હૈ કિ—

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

" गेहेषु पण्डिताः केचित्, केचिद् ग्रामेषु पण्डिताः ।
सभायां पण्डिताः केचित्, केचित्पण्डितपण्डिताः ॥ १ ॥"

—कई लोग घर में ही पंडित बनते हैं और कई लोग ग्राम में ही, कई पांच दश अपढ़ लोगों के जमाव में अपनी पंडिताई छांटते हैं, परन्तु पंडितों के बीच में तो पंडित कोई विरला ही होता है ।

आगे आनन्दसागरजीने यह सोच समझ कर कि अपने अंधभक्तों के गाँवों में अपना मनमाना हुल्लड़ और अंडबंड उन्मत्त प्रलाप करके, इतना ही नहीं बल्कि जिस तरह चाहेंगे उसी तरह अपने मनमोदक सफल कर लेवेंगे और अंधभक्तों के सहारा से अपनी विजय पताका फरकने लगेगी । इसी हेतु को मन में रख कर चपेटिका के द्वारा जाहिर किया है कि—

अब तुम भी मारवाड़ के इस भाग में हो और हम भी इसी भाग में हैं, तो चातुर्मास के बाद नयाशहर, पाली, जोधपुर और सिरोही जस कोई भी प्रसिद्ध स्थल में शास्त्रार्थ करने की पास-शुक्ला पूर्णिमा के पेश्तर की मुद्दत और उस विषय (अपवाद पर भी रंगीन कपडा नहीं होना चाहिये) की प्रतिज्ञा जाहिर करके आना लाजिम है । पृष्ठ—३७.

पाठकों ! देखा आनंदसागरजी की निर्बलता का नमूना ?, आपने वे प्रसिद्ध स्थल दिखाये हैं, जहाँ कि केवल लकीर के फकीर अन्धभक्त ही है और वे प्रायः पिशाचपंडिताचार्य और अपवाद सेवकों के ही श्रद्धालु हैं । भला ! इस प्रकार के एक पक्षी क्षेत्र

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

शास्त्रार्थ के लिये कभी योग्य माने जा सकते हैं ? नहीं ! नहीं !! कदापि नहीं ! ! !. शास्त्रार्थ के लिये तो ऐसे क्षेत्र होना चाहिये कि जहाँ किसीके पक्षपाती न हों, अथवा दोनों पक्ष के लोग हों। लेकिन जिन्हें खाली शास्त्रार्थ का डौल दिखा कर केवल अंधभक्तों में यद्वा तद्वा के जाप से और जैसे को 'जस' व पौप को 'पाप' लिखके झूंठी वाह वाह करना हो. उन्हें पक्षपात रहित अथवा उभय पक्ष के सभ्य लोगों से मतलब ही क्या है ? वे तो अपने भोंपों के शरण में ही रहना पसंद करेंगे।

चार वार तो आनंदसागर (सागरानंदसूरि) जी रतलाम, सेंवलिया और मन्दी से शास्त्रार्थ की मंजूरी देने पर भी अपवाद से रंगीन कपडे सिद्ध करते करते आखिरी टाइम पर रात्रि को ही पलायन करके कूच कर गये और कलकत्ते जाकर सांस लिया। तो जिसकी जगह जगह से वार वार आखिरी टाइम पर भगजाने की आदत पड चुकी है वह फिर भी खुद की प्रतिज्ञा के लिये टॉय टॉय फिस् बोल जाय तो कौन ताजुब की बात है ?. इतना ही नहीं, किन्तु देवद्रव्य की चर्चा में विजयधर्मसूरिजी के साथ, अधिकमास की चर्चा में खरतर गच्छीय मणिसागरजी के साथ, सामायिक में पिछली ईरियावहिया की चर्चा में कृपाचन्द्रसूरिजी के साथ, और त्रिस्तुतिविषयक चर्चा में पं० तीर्थविजयजी के साथ में शास्त्रार्थ का हल्ला मचाते हुए आखिरी टाइम पर आनंदसागरजीने पलायन का ही रास्ता पकड़ा था। ठीक ही है जिसके भाग्य–फलक में जगह जगह से पलायन करना ही लिखा है, वह शास्त्रार्थ के अयोग्य ही है। समझो कि–ऐसे लोगों की दौड़

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

कहाँ तक ? अन्धभक्तों के शरण तक । कहावत भी है कि— मियां की दोड कहाँ तक ? मसीद तक । बस खैर ! खैर ! ! बाबा ! ! चुपचाप बैठे हुए अब खैर मनाओ ! ! !

पुनरावलोकन—

पाठकवर ! इस पुस्तक को समाप्त करते हुए चपेटिका के लेखक पिशाचपंडिताचार्य की वे तीन बातें, जो उसने अपनी पिशाचता दिखलाने के लिये, अथवा यों कहिये कि निज जन्म को बरबाद करने के लिये लिख डाली हैं । उनका भी फिर से अवलोकन कर लेना अनुचित नहीं है । उनमें से प्रथम बात यह है कि—

" असिवे ओमोयरिए, रायदुठे भए व गेलन्ने ।
सेहे चरित्तसावय, भए व जयणाए गिण्हिज्जा ॥

—समर्थ, स्थिर, स्वतंत्र, और लक्षणवाला वस्त्र न मिले तब असमर्थादि विशेषणवाला वस्त्र भी अशिवादि कारणों में यतना के साथ लेना. पृ० ६. "

देखिये ! पिशाचपंडिताचार्य के मलिन हृदय से निकले हुए इस अर्थ की ऊपर दी हुई गाथा में कहीं गंध तक भी है ?, बस ऐसे ही उटपटांग (अंडबंड) अर्थ करके अपवाद के हिमायती पिशाचपंडिताचार्यने स्व–पर का जन्म बरबाद किया है ! दर असल में इसीका नाम दुराग्रह है और ऐसे दुराग्रही लोग सूत्रोंके अर्थ, पाठों का फेरफार और कहीं का पाठ कहीं लगा देना आदि अनर्थ कर डालें तो कोई आश्चर्य नहीं है । क्योंकि दुराग्रही लोगों का

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

यही काम है. ये लोग अगर ऐसा अनर्थ न करें तो फिर तमस्तमां का अतिथि कोन बनें ?.

इस गाथा से चपेटिका के लेखक महाशय यह सिद्ध करना चाहते हैं कि यह गाथा वस्त्र के वर्ण परावर्त्तन को दिखानेवाली नहीं है। इसलिये इसके उत्तर में हम विशेष उल्लेख न करके लेखक के परम मित्र वस्त्रवर्णसिद्धि कार का चपेटा लगा देना ही उचित समझते हैं। वह यह है कि—भाष्यकार महाराजने वर्णपरावर्त्तन का कारण यह कहा है—

असिवे ओमोयरिये, रायदुट्ठे भए व गेलन्ने।
सेहे चरित्त सावय, भए य गहणं तु जयणाए ॥ १॥

भावार्थ—अशिव, ऊनोदरी, राजद्वेष, भय, व्याधि, शैक्षक, चारित्र अथवा पशु आदि जानवर के भयसे यतना पूर्वक ग्रहण करना, इति।

वस्त्रवर्णसिद्धि-पृष्ठ ७४-७५.

" दैव दैवियों का उपद्रव हो या ऊनोदरी हो याने गोचरी पूरी न मिलती हो, राजा द्वेषी हो, किसी का भय हो, अथवा कोई शारीरिक व्याधि हो ऐसे समय वस्त्र पात्र का रंग पलटना। " देखो ! वस्त्रवर्णसिद्धि पृष्ठ ७४ पंक्ति ७.

इस लेख से हमारा वही सिद्धान्त निर्विवाद सिद्ध हो जाता है कि-"असिवे ओमोयरिए रायदुट्ठे भए व गेलन्ने।" इत्यादि भाष्यकारोक्त कारणों के उपस्थित होने पर कल्पादि वर्णक-

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पदार्थ से वस्त्र को धो लेने में कोई भी दोष नहीं है। क्योंकि चूर्णिकार महाराज 'खदिर बीयककादीहिं य पुणो पुणो धोव्वमाणं' तथा 'धावणो ककादिणा' इत्यादि वाक्यों से कल्कादि से धो लेने का ही विधान करते है, रंगने का नहीं। अतएव चपेटिका के लेखक का 'रंगसे वस्त्रों की आज्ञा दी है यह वाक्य कैसा असंगत और झूंठा है, क्योंकि न तो रंगसे वस्त्र धोये जाते हैं' इत्यादि सभी उन्मत्त–प्रलाप निष्फल ही है।

वस्त्रवर्णसिद्धिकार का जो लेख ऊपर दर्ज हैं उसमें एक बात बड़े महत्त्व की जाहिर होती है। वह यह कि जिन्हों के पीछे देव-देवियों का उपद्रव लगा हो, जिन्हों को पूरी गोचरी खाने को न मिलती हो और जिन्हों पर राजा रुष्टमान हुआ हो उन्हीं के लिये विवर्ण वस्त्र रखने का भाष्यकार फरमा रहे हैं, तो जान पड़ता है कि अपवाद के हिमायतियों के पीछे ये कारण अवश्य लगे होंगे? इसीसे ये लोग विवर्ण वस्त्र के लिये इतना दुराग्रह कर रहे हैं और अर्थों का अनर्थ करते भी नहीं लजाते।

दूसरी बात चपेटिका के लेखक की यह है कि—

भीमसिंह माणेकवाळी सज्झायमाळा में तो ऐसा पाठ है कि– 'कालां कपडा खंभे धावली, कांख देखाडी बोले' अर्थात् वहां तो काले कपड़ेवाले को कुगुरु कहा है लेकिन रंगीन कपड़ेवाले का नाम ही नहीं हैं. 'रंगेल' ऐसा शब्द तो.....झूंठा लिखा है. पृष्ट–८.

मान्यवर! आपकी फेरफार की हुई भीमसिंह माणेकवाली सज्झायमाला में चाहे सो लिखा गया हो। परंतु प्राचीन लिखे

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

हुए पत्र जो जुदे जुदे तीन लेखकों के हमे प्राप्त है, जो संवत १७९४, १८५२ और १९२१, अनुक्रम से लिखे हुए हैं। उन तीनों प्राचीन–पत्रों में तो 'रंगेल कपड़ा खंभे धावली' ऐसा ही पाठ है. इससे मालूम होता है कि सज्झायमाला में छपाते वक्त किसी रंगीन कपड़ेवालेने जान बूझ के फेरफार कर दिया है, लेकिन प्राचीन पत्रोंका ही पाठ सही है। इसके अलावा शा. कचराभाई गोपालदास अमदावाद, बडीपोल के तरफ से सं० १९५० में मुद्रित 'जैनसिज्झायमाला' भाग २ के पृष्ठ १४९ में 'रंगेलँ कपडा खंभे धावली' ऐसा ही छपा है।

कदाचित् थोडी देर के लिये पिशाचपंडिताचार्य के लिखे अनुसार 'काला कपडा खंभे धावली' ऐसा ही पाठ मान लिया जाय तोभी क्या सिद्धि हुई ? क्योंकि उसी सज्झायमाला में छपी हुई उसी सज्झाय की आगे की ८ वीं गाथा को देखो !

"आचारांगे वस्त्रनो भाख्यो, श्वेत जे मानोपेत।
ते तो मारग दूरे मूक्यो, कपडा रंगे हेत ॥ जि० ॥८॥"

अर्थात्—आचारांगसूत्र में साधु के लिये श्वेत मानोपेत वस्त्र रखना फरमाया है, उसको छोड़कर जो साधु कपड़ा रंगते हैं, वे साधु नहीं, कुगुरु हैं। इसमें उपाध्यायजी श्रीयशोविजयजी महाराजने रंगीन कपड़ेवालों को भी कुगुरु कहा है। इतना ही नहीं, बल्कि सज्झाय की आंकणी में तो रंगीन कपड़ेवालों को कपटी का सुन्दर खिताब भी देदिया गया है। लो फिर भी वांचलो "जिणंदे कपटी कहिया एह, एहनुं नाम न लीजे जि०"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तीसरी बात पिशाचपंडिताचार्य की यह है कि—

आचार्य श्रीविजयदेवसूरिजी के पट्टक में ही लिखा है कि—'आचार्य उपाध्याय सिवाय बीजा यतिओ तेमज गीतार्थे हीरागल वस्त्र तथा शणनुं वस्त्र न वहोरवुं. कदाच आचार्य आदिके दीधुं होय तो पण उपर नहिं ओढवुं. केशरियुं वस्त्र होय तो तेनुं वर्णपरावर्त्तन करी नांणवुं. बीजा पण पीतवर्णवाला वस्त्र न ओढवा.' इस पट्टक से आचार्य और उपाध्याय को हीरागल और सण का वस्त्र रखने की और वहरने की छूट हुई है तो फिर वह बात क्यों नहीं मानना ? इतना ही नहीं, लेकिन 'केशरियुं होय तो' इस वाक्य से केशरिये रंग के वस्त्र रखते थे और वहोरते थे. पृष्ठ—६.

पंडितंमन्य ! वे आचार्य उपाध्याय जो जैनशासन के रक्षक और राजमान्य होते हैं और जिन्होंके चरण—कमलों में बडे बडे राजा महाराजा शिर झुकाते हैं, उन्हीं आचार्य उपाध्याय के लिये हीरागल और सण का वस्त्र रखने और वहरने की आज्ञा है। लेकिन तुम्हारे जैसे जो हजारों रुपैया भेट कर और बीसों दफे मिलने की आजीजी करा कर खुशामद के साथ एक दो सामान्य ठाकुर या दीवान को बुलाते हैं या खुद खुशामद करनेके लिये उनके घर पर जाते हैं, उन आचार्य उपाध्याय के लिये हीरागल और सण का वस्त्र रखने और वहरने की आज्ञा नहीं है। तथापि जिस प्रकार आचार्य उपाध्याय को हीरागल और सण का वस्त्र श्रीविजयदेवसूरिजी महाराज की आज्ञानुसार रखना वोहरना मान्य करना है उसी प्रकार उन्हीं आचार्य के आदेशानुसार केशरिया वस्त्र का वर्ण परावर्त्तन करके

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

काम में लेना और पीतवर्ण वाला वस्त्र बिलकुल न रखना भी तो मानना चाहिये । क्योंकि श्रीविजयदेवसूरिजी महाराजने 'કેશરિયું વસ્ત્ર હોય તો તેનો વર્ણપરાવર્ત્તન કરી નાંખવું. બીજા પણ પીતવર્ણવાલા ન ઓઢવા ' इन वाक्यों से साफ जाहिर कर दिया है कि—'**साधुओं को वीरशासन में सफेद कपड़ा ही रखना चाहिये, लेकिन सफेद वस्त्र के न मिलनेपर कहीं केशरिया वस्त्र मिला, तो उसका वर्ण बदल किये विना काम में नहीं लेना चाहिये और पीले रंग का वस्त्र तो न लेना, और न ओढ़ना चाहिये ।**' अतएव शास्त्र और आचार्यों की आज्ञा से यही बात अक्षरशः सिद्ध है कि—भगवान् श्रीमहावीर के वर्त्तमान शासन में शास्त्रों में कहे हुए कारणों में का कोई कारण नहीं है और यतियों की शिथिलता का कारण शास्त्रोक्त नहीं है। इसलिये साधु साध्वियों को शास्त्रोक्त मर्यादा से अल्पमूल्यवाला सफेद वस्त्र रखना ही निर्दोष है।

अब रही पिशाचपंडिताचार्य की यह आशंका कि 'केशरियुं वस्त्र होय तो इस वाक्य से केशरिया वस्त्र रखते थे और वहरते थे' सो निर्बलता और पिशाचता की द्योतक है । पट्टक के पेश्तर या उसी समय में केशरिया कपड़े रखते और लेते थे इससे यह शास्त्र-विहीन प्रणाली सत्य और ग्राह्य नहीं मानी जा सकती । जिस प्रकार आज रोज आपलोग अपनी शिथिलताओं को अपवाद की पछोड़ी में छिपाने का दुराग्रह कर रहे हो, उसी प्रकार उस समय में भी दुराग्रह के वश शास्त्र-विरुद्ध केशरिया वस्त्रों के पीछे चारित्र को बरबाद करनेवाले अवश्य होंगे परन्तु शासनरक्षक आचार्योंने

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

तो समय समय पर शास्त्रीय शुद्ध मर्यादा का प्रकाश निर्भय रीति से किया और अब भी करते ही हैं, जिसके प्रभाव से पिशाचपंडिताचार्य के अपवाद–पादोपसेविका वचन, लेख और आचरणों पर भवभीरू सज्जन महानुभावों को घृणा हुई होगी और होती ही जा रही है।

उपसंहार.

सत्यान्वेषी महानुभावो! इस **कुलिङ्गिवदनोद्गार–मीमांसा** में शास्त्रीय और आधुनिक शासनप्रेमी–विद्वानों के सत्य प्रमाणों से सभ्यता पूर्वक हरएक विषय को परिस्फुट (जाहिर) किया गया है और जो कुछ बातें इसमें चर्ची गई हैं वे स्वमान या किसी को बुरा दिखाने के लिये नहीं, किन्तु शासनकी रक्षा और वास्तविक सत्य वस्तुस्थिति को दिखाने के लिये ही जानना चाहिये। शास्त्रकार महाराज भी फरमाते हैं कि—कोई चाहे राजी हो अथवा नाराज, लेकिन हित करनेवाली सत्य बात को कहे विना कभी नहीं रहना चाहिये। तथा च शास्त्रकारमहर्षिः—

रूसउ वा परो मा वा, विसं वा परिअत्तउ।
भासियव्वा हिया भासा, सपक्खगुणकारिणी ॥१॥

—दूसरा मनुष्य बुरा मान कर चाहे रोष करे या न करे अथवा जहर खाने को तैयार हो जाय तो भी स्वपक्ष में हित करनेवाली सत्य बात कहना ही चाहिये।

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

इसी सिद्धान्त के अनुसार प्रस्तुत मीमांसा में वास्तविक सत्य का विचार आलेखित है और वह आज जनता के कर-कमलों में उपस्थित है। अतएव इस की सत्यता वा असत्यता का निर्णय करना यह जनता के ऊपर ही निर्भर है और जनता ही इसकी वास्तविक कसौटी है। इससे जनता को चाहिये कि इसको अपनी मानसिक कसौटी पर चढा कर शास्त्रीय वास्तविक सत्य के विलासी बनें और असत्य मार्ग का परित्याग करें। एक विद्वान का कथन भी है कि—

" किसी धर्म या मत को प्राचीन होने ही के कारण ग्रहण मत करो। प्राचीनता उसकी सत्यता का कोई प्रमाण नहीं। कभी पुराने से पुराने मकान भी गिराने पडते हैं, तथा पुराने कपडे भी बदलने पडते हैं। नये से नया परिवर्त्तन भी यदि वह बुद्धि की परीक्षा में सफल हो सकता है तो वह उतना ही अच्छा है, जितना कि चमकते हुए ओस से सुशोभित गुलाब का फूल।"

" जो मनुष्य अपनी भूलों और त्रुटियों को प्रगट होते नहीं देख सकता, किन्तु उन्हें छिपाया चाहता है, वह सत्यमार्ग का अनुगामी नहीं हो सकता। उसके पास लालच को पराजित करने के लिये काफी सामान नहीं है। जो मनुष्य अपनी नीच प्रकृति का निर्भय होकर सामना नहीं कर सकता, वह त्याग के ऊंचे पथरीले शिखर पर नहीं चढ़ सकता।"

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

सूचना—

चपेटिका के द्वारा ही चपेटा खानेवाले महाशय पिशाचपंडिताचार्य को सूचना दी जाती है कि नीचे लिखे सवालों का जवाब सभ्यता और प्रामाणिक शास्त्र सबूतों के साथ पुस्तकरूप में फाल्गुनशुक्ला पूर्णिमा के पेश्तर जाहिर करदें, ताकि पबलिक आम को उनकी सत्यता जानने और समझने का मौका मिले। साथ साथ में यह भी कह देना समुचित समझा जाता है कि चपेटिका के चपेटा सह लेनेवाले लेखक के सिवाय दूसरे कोई महाशय बीच में पंडितंमन्य बन कर उत्तर देने की तकलीफ न उठावें। क्योंकि उन मियाँमिठुओं के साथ चलते हुए प्रकरण में हमारा कोई ताल्लुक नहीं है।

१ प्रश्न—अमिनं ओमोयरिए, रायदुठे भएव गेलन्ने। इस गाथा का 'समर्थ, स्थिर स्वतंत्र और लक्षणवाला' इत्यादि अर्थ जो तुमने किया है, सो बिलकुल शास्त्रविरुद्ध ही है। इस लिये इसकी सत्यता अथवा तुम्हारे कल्पित अर्थ के वास्ते भाष्य टीका और चूर्णि का पाठ दिखलाओ? और यह गाथा अपवाद से वर्ण परावर्त्तन को दिखलाने वाली नहीं है ऐसा शास्त्र सबूतों से सिद्ध करो?

२ प्रश्न—गच्छाचारपयन्ना के लघुवृत्तिकार ने 'शुक्ल वस्त्र छोडने का कहा है' ऐसा तुमने टीकाकार के विरुद्ध लिखा है, इस असत्य लिखान को सिद्ध करनेवाला तुम्हारे पास लघुवृत्ति या

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

बृहद्वृत्ति का कोई भी प्रमाण हो, तो दिखलाओ ? और शास्त्र-मर्यादा से वीरशासनानुयायी सफेद कपडा रखने वाले साधु साध्वी बकुश की गिनती में है ऐसा शास्त्र सबूतों से सिद्ध करो ?

३ प्रश्न—उपाध्यायजी श्री यशोविजयजी महाराजने कुगुरु सज्झाय की ८ वीं गाथा में रंगीन कपडे रखनेवाले साधुओं को कुगुरु और कपटी कहा है। इसको असिद्ध करनेवाला और कुगुरु सज्झाय उपाध्यायजी की बनाई हुई नहीं है ऐसा सिद्ध करनेवाला प्रमाण जाहिर करो ?

४ प्रश्न—निशीथचूर्णि में 'धावणो कक्कादिणा' इस वाक्य से कल्कादि से धोने का विधान नहीं है और शीतोदक से कपडे धोनेवालों को प्रायश्चित्त नहीं है, तुम्हारे इस कथन को सिद्ध करनेवाला प्रमाण दिखलाओ ?.

५ प्रश्न—श्री महावीर शासन में सफेद वस्त्र नहीं रखना और गाड़ी वाड़ी लाडी के प्रेमी यतियों से जुदा भेद दिखाने अथवा उन अनाचारियों से शासन को बचाने के लिये वर्ण परावर्त्तन कर डालना ऐसे भाव का दर्शक कोई भी शास्त्रीय प्रमाण हो उसको प्रकाशित करो ?

६ प्रश्न—शास्त्रों में स्वपर को ग्लानी उत्पन्न करनेवाले और नील फूल पड़जाने की संभावनावाले मलिन वस्त्रों का धो लेने का विधान नहीं है ऐसा जो तुम लिखते और कहते हो उसको शास्त्र सबूतों से साबित करो ?

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

७ प्रश्न—आचाराङ्गटीकाकार महाराजने 'एतच्च सूत्रं जिनकल्पिकोद्देशेन द्रष्टव्यं, वस्त्रधारित्वविशेषणात् गच्छान्तर्गतेऽपि वा अविरुद्धम्' इस कथन से जिनकल्पी-विषयक सूत्र को गच्छवासी के लिये भी अविरुद्ध बताया, पर तुम ऐसा नहीं मानते हो, तो इसमें प्रमाण क्या है ?

८ प्रश्न—जीर्णप्राय शब्द का अर्थ जूने जैसा (सादा) नहीं होता और सादा कपड़ा अल्पमूल्य नहीं होता ऐसा तुम्हारा निज मंतव्य है उसके लिये तुम्हारे पास शास्त्रीय प्रमाण क्या है ? और शास्त्रोक्त कारणों की संख्या में यतियों की शिथिलता रूप कारण बतानेवाला शास्त्र-पाठ कौनसा है ?

९ प्रश्न—मरीचिकी विचारणा में 'सुक्कंबरा समणा' इस वाक्यसे श्वेत वस्त्र धारी समण (साधु) कहे गये हैं ऐसा सूत्रोक्त होनेपर भी इसको तुम अमान्य कहते हो तो इस अमान्यता का आधारभूत सबूत क्या है ? और अपवाद सावधिक नहीं होता, किन्तु ताजिन्दगी का ही होता है ऐसा शास्त्र का पाठ जाहिर करो ?.

वाचको ! बस पिशाचपंडिताचार्य की कुतर्कों पर अब परदा पड़ता है, वह फिर कभी यथावसर से खुलेगा और समयपर ही असत्य कुतर्कों से वादि होनेवाले वोपदेवों की पोपलीला का खेल दिखावेगा। इसलिये अभी तो इस मीमांसा को चुपचाप बैठे हुए दिल लगाकर खुद वांचो, अपने अपने इष्टमित्रों को

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

वचाओ और बाद में लायब्रेरी के टेबल पर रखदो। ॐ शांतिः! शांतिः!! शांतिः!!!

शतमतां लभतां कुकुलिङ्गितमटचारणमोहनकाग्रहः।
विदधतां दधतां सुविचारतां, मतिमतां पठतां मतिदाऽमुका ॥१॥
उन्मार्गप्रपतितानां, जन्तूनामुपकारिका।
शासनोद्दीपिका चैषा, मीमांसा रचिता शुभा ॥ २ ॥

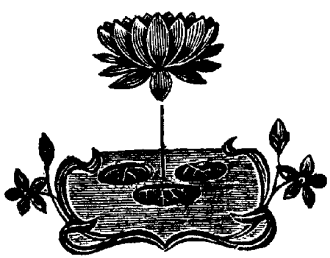

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पबलिक आमको सूचना—

महानुभावो! श्रीमान् सागरानन्दसूरिजी के तरफसे प्रकाशित चेलेंज और चपेटिका के मिलते ही हमारे तरफ से स्थान, समय मयप्रतिज्ञा के निश्चित करके सागरानन्द सूरिजी को ता० १६-१२-२६ के मुद्रित चेलेंज के द्वारा पोषसुदि पूर्णिमा के रोज ही शास्त्रार्थ कर लेने के लिये सूचित कर दिया गया था, पर वे नियमित स्थान और टाइम पर शास्त्रार्थ के लिये हाजिर नहीं हुए, अतएव उनका पराजय स्वतः समझ लेना चाहिये। अब हम उनके तरफसे मुद्रित या लिखित किसी चेलेंज सूचना पर ध्यान नहीं देंगे। क्यों कि उन्हें शास्त्रार्थ करना ही नहीं है, इसीसे वे हरवख्त समय पर हाजिर न होकर टालाटूली से ही अपनी बहादुरी बतलाना चाहते हैं। एसी निर्बल बहादुरी से भरे चेलेंज वगैरह रद्दी-नशीन ही समझ लेना इतिशम्।

मुनि य[redacted]

For Private And Personal Use Only

Shri Mahavir Jain Aradhana Kendra www.kobatirth.org Acharya Shri Kailassagarsuri Gyanmandir

पबलिक आमको सूचना—

महानुभावो! श्रीमान् सागरानन्दसूरिजी के तरफसे प्रकाशित चेलेंज और चपेटिका के मिलते ही हमारे तरफ से स्थान, समय मयप्रतिज्ञा के निश्चित करके सागरानन्द-सूरिजी को ता० १९-१२-२६ के मुद्रित चेलेंज के द्वारा पोषसुदि पूर्णिमा के रोज ही शास्त्रार्थ कर लेने के लिये सूचित कर दिया गया था, पर वे नियमित स्थान और टाइम पर शास्त्रार्थ के लिये हाजिर नहीं हुए, अतएव उनका पराजय स्वतः समझ लेना चाहिये। अब हम उनके तरफसे मुद्रित या लिखित किसी चेलेंज सूचना पर ध्यान नहीं देंगे। क्यों कि उन्हें शास्त्रार्थ करना ही नहीं है, इसीसे वे हरवख्त समय पर हाजिर न होकर टालाटूली से ही अपनी बहादुरी बतलाना चाहते हैं। एसी निर्बल बहादुरी से भरे हुए उनके चेलेंज वगैरह रद्दी-नशीन ही समझ लेना चाहिये। इतिशम्।

मुनि यतीन्द्र।

For Private And Personal Use Only